ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 27 अगस्त 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 27 अगस्त 2017 से 02 सितम्बर 2017

भाद्र शु.– 06 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 86, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. पटियाला में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर वेद प्रचार एवं संस्कृत सप्ताह

आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिंदरा रोड, पटियाला द्वारा श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर 'वेद प्रचार एवं संस्कृत सप्ताह' मनाया गया। राष्ट्र को विकास और नई दिशा की ओर ले जाने के लिए युवा पीढ़ी को वेदों का ज्ञान देने व संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से स्कूल में पूरा श्रावण मास 'यज्ञ' किया गया। बच्चे प्रतिदिन हवन सामग्री घी, समिधा और प्रसाद बनाकर लाते रहे जिससे यह महायज्ञ पूरा मास निरंतर चलता रहा। इसके अंतर्गत प्रतिदिन बच्चों को वैदिक प्रवचन भी दिए गए तथा भक्तिपूर्वक भजनों की प्रस्तुति से सारा वातावरण 'ओ३ममय' बना रहा।

प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर ने अपने संबोधन में कहा, "जीवन को यज्ञमय बनाना प्रत्येक आर्य का परम कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि डॉ. पूनम सूरी जी के मार्गदर्शन में विद्यालय महर्षि देव दयानन्द के आह्वान 'वेदों की ओर लौटो' की अनुपालना करते हुए समय–समय पर ऐसे आयोजनों के माध्यम से बच्चों को इस आन्दोलन से जोड़ता रहता है। विश्व में शान्ति,आपसी प्रेम, सद्भावना व भाईचारे की भावना पैदा करने के लिए मानवमात्र को वेदों का पाठ पढ़ाना होगा।" उन्होंने रक्षाबंधन के पावन पर्व का महत्त्व बताया कि यह पर्व केवल भाई–बहन के प्यार का ही प्रतीक नहीं बल्कि इस दिन बाँधा जाने वाला रक्षासूत्र हमें 'गुरु–शिष्य' परम्परा, 'प्रकृति सुरक्षा' व 'राष्ट्र रक्षा' के सूत्र से बाँधता है।

बच्चों में संस्कृत भाषा के पठन–पाठन के प्रति रुचि पैदा करने के उद्देश्य से संस्कृत में विभिन्न प्रतियोगिताएँ 'ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्र', 'संस्कृत श्लोकोच्चारण', 'वैदिक भाषण ,प्रश्नोत्तरी व सूक्ति व्याख्या' प्रतियोगिताएँ करवाई गईं। जिनमें बच्चों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन पर करवाई गई प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को प्रमाण–पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर श्री पवन कुमार गोयल (प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ, इंडिया), श्री वाई.पी. मेहरा, श्री विनय वतराना, डॉ. रमेश पुरी, स्थानीय आर्य समाज के सदस्य तथा नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्तिथ रहे। 'शान्तिपाठ' व 'प्रसाद–वितरण' के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

अलवर के महाविद्यालय में हुआ वृक्षारोपण

आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर में वृक्षारोपण समारोह श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति की अध्यक्षता ने मनाया गया। श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता के द्वारा सर्व प्रथम पौधा रोपण किया गया साथ ही श्री अशोक कुमार आर्य, श्री प्रदीप कुमार आर्य, श्री सुरेश कुमार दर्गन, श्रीमती कमला शर्मा, श्री अशोक शर्मा, श्री डालचन्द, श्री धर्मवीर आर्य, श्रीमती ईश्वर देवी, श्रीमती रेणु सिंह, श्रीमती नन्दनी जैन, श्रीमती निर्मला पारीक आदि ने भी वृक्षारोपण किया। महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रवक्ताओं, कर्मचारियो व छात्राध्यापिकाओं द्वारा भी महाविद्यालय में पौधे लगाए गए। प्राचार्य डॉ. सी.पी पालीवाल ने यह जानकारी दी कि आज लगभग 101 पौधे लगाये गए है और 500 पौधो को लगाने का लक्ष्य रखा है। जो अन्यत्र लगाए जाएँगे। अन्त में प्राचार्य द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया।

आर. आर. बावा डी.ए.वी. बटाला में मनाया गया स्वतन्त्रता दिवस

आर. आर. बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज, बटाला में स्वतन्त्रता दिवस की 71वीं वर्षगाँठ के अवसर पर ''ध्वजारोहण'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एस.पी. मरवाहा, चेयरमैन, स्थानीय समिति, श्री विनोद सचदेवा, श्री अश्विनी मरवाहा एवं अन्य सदस्यगण भी विशेष रुप से उपस्थित हुए। कॉलेज के प्राध्यापकगण एवं कर्मचारी वर्ग सहित छात्राओं ने इस समारोह में भाग लिया।

श्री एस.पी. मरवाहा ने इस अवसर पर ध्वज फहरा कर, एन.सी.सी के कैडिटों से विधिवत् सलामी ली। राष्ट्रीय गान एवं देश भक्ति के गीतों से कॉलेज प्रांगण गुजांयमान हो रहा था। अपने अधिभाषण में श्री एस.पी. मरवाहा ने स्वतन्त्रतापर्व की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए और स्वयं के अनुभवों को बताते हुए कहा कि मैं उन शहीदों, उन वीरों को सलाम करता हूं, उनका आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने अनेक जद्दोजहद से, अपना बलिदान देकर, अपना सर्वस्व न्योछावर करके इस आज़ादी को प्राप्त

शेष पृष्ठ 11 पर

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 27 अगस्त 2017 से 02 सितम्बर 2017

आओ, देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवास तदनुप्रवोढुम्।
अग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।

अथर्व 16.56.3

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **अग्निः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अपि)** क्या **(देवानां)** देवों के **(पन्थां)** मार्ग पर **(आ– अगन्म)** [हम] चलें? [हाँ], **(यत्)** यदि **(तत् अनुप्रवोढुम्)** उस पर स्वयं को चलने में **(शक्नवाम)** समर्थ हों। **(अग्निः)** आत्मा **(विद्वान)** विद्वान् है, **(सः)** वह **(यजात्)** यज्ञ करे, **(सः)** वह **(इत्)** सचमुच **(होता)** होम–निष्पादक है। **(सः)** वही **(अध्वरान्)** यज्ञों को और **(सः)** वही **(ऋतून्)** ऋतुओं को **(कल्पयाति)** रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो,ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं। कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्वि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हाक देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चल रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम कहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले अपनी शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पर पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चित होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ– निष्पादन में कुशल है,संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देख कि किस यज्ञ के लिए कौन–सी ऋतु, कौन–सा समय उपयुक्त है क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारम्भ किया गया यज्ञ सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

अमृत–पान

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि परमात्मा की भक्ति तुच्छ स्वार्थ के लिए करना ही आध्यात्मिक आँखों के प्रकाशरहित होने का प्रमाण देती है। इसलिए देखना चाहिए कि कहीं हमारी भक्ति, पूजा, संन्ध्या भी सांसारिक वस्तुओं और वर्ग के लिए तो नहीं हैं। यदि अब तक यह गलती करते रहे हैं। यदि अब तक यह गलती करते रहे हैं तो अभी बचने का प्रयत्न करें।

दूसरी कथा में स्वामी जी ने कहा क्रोध, अज्ञान, घृणा, बदले की भावना और ऐसे ही अन्य विचारों को मन में लाकर तुम ईंधन डालते हो और इनके कारण जो दुःख कष्ट, निराशा, हताशा होती है–उनका ईंधन डालकर तुम सीने को जला रहे हो। इसलिए सारे अंगों–प्रत्यंगों और सारी इन्द्रियों की ओर से सावधान रहो। इससे संसार के आकर्षण दूर हो जायेंगे और तुम आग से पृथक् हो जाओगे। फिर तुम्हारा मन शान्त हो जायेगा। तुम परमात्मा के आनन्द की प्राप्त कर सकोगे।

आगे पढ़ेंगे दो लघु कथायें

अन्न या रक्त

गुरु नानक देव गाँव में प्रचार कर रहे थे। एक निर्धन किसान उनके पास आया और पाँवों पर सिर रखकर कहा– "महाराज! आज मुझ दास के घर का भोजन ग्रहण कीजिए।" गुरु नानकदेव ने मुस्कराते हुए कहा– "अच्छा भाई! जैसी तुम्हारी इच्छा।"

वह किसान फूला न समाया। दौड़ता हुआ घर आया और अत्यन्त प्रेम से अपनी पत्नी से कहा– "आज गुरु नानक साहब भोजन करेंगे। उसकी पतिव्रता स्त्री अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने बड़े प्रेम और उत्साह से भोजन तैयार किया।" मक्की की रोटी और ताजा मक्खन, ताजा साग और छाछ का लोटा तैयार।

इधर प्रेम और उत्साह से यह भोजन तैयार हो रहा था। दूसरी ओर गुरु नानक के पास उसी गाँव का धनिक नम्बरदार आया और उसने भी गुरु नानकदेव जी से भोजन के लिए कहा। गुरु नानकदेव जी ने उसे भी स्वीकार कर लिया।

धनिक नम्बरदार ने छत्तीस प्रकार के खाने तैयार कराए। नरम–नरम फुलके बनवाए। सोने के थाल और सोने के बर्तनों में उनको रखकर पालकी में बैठा और भोजन गुरु नानकदेव जी के पास ले–चला।

उसी समय गरीब किसान भी अपने सिर पर अपना रूखा–सूखा भोजन लेकर आया, परन्तु किसी ने उसकी ओर देखने का भी कष्ट न किया। सभी धनिक नम्बरदार की प्रशंसा कर रहे थे। गुरु नानकदेवजी ने जब इस दृश्य को देखा तब वे सब–कुछ समझ गए। जब किसान निकट आया तो बड़े प्रेम से गुरु नानकदेव जी ने उसे अपने पास बैठा लिया और उसका भोजन खाने लगे। जब नम्बरदार ने यह दृश्य देखा तब उसके क्रोध की सीमा न रही, परन्तु क्रोध को काबू मे करके उसने कहा– "महाराज! आप मेरा स्वादिष्ट और छत्तीस प्रकार का भोजन छोड़कर ऐसा मोटा अन्न क्यों खाते हैं? यह आप ठीक नहीं कर रहे हैं।" इस अपमानजनक शब्दों को सुनकर सभा चकित रह गई और गुरु नानकदेव की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगी।

गुरु नानकदेवजी मुस्कराए और कहा– प्रतीत होता है कि सभी लोग कारण जानना चाहते हैं कि मैं मोटा अन्न क्यों खा रहा हूँ। देखो! यह कहकर उन्होंने नम्बरदार के लाए हुए भोजन में से चार–पाँच रोटियाँ उठा लीं और उन्हें दोनों हाथों से दबाया। कहावत है कि उन रोटियों में से खून की धारा बह निकली, जिससे देखकर सब लोग चकित रह गए। गुरु नानकदेव ने कहा– "क्या यह भोजन किसी धार्मिक मनुष्य के खाने के योग्य है? यह गरीबों का खून निचोड़–निचोड़कर, अनाथों का चमड़ा उधेड़–उधेड़कर इकड्ढा किया हुआ अन्न क्या मोटे अन्न से बुरा नहीं। इसलिए मैंने यह अन्न नहीं खाया और गरीब किसान का अन्न जो गाढ़े पसीने की कमाई का है, मैंने खाया है।"

यह एक कहावत है। सच्ची या झूठी, इससे कोई तात्पर्य नहीं, परन्तु एक बात है जो यह प्रकट करती है कि जब तुम कुछ खाओ तो सोचो तुम क्या खा रहे हो? क्या यह गरीबों और अनाथों का खून तो नहीं। क्या यह सताए हुओं की आह से विष बना हुआ अन्न तो नहीं। जो इस प्रकार सोचकर शुद्ध खाते हैं, वे सुखी होते हैं।

तुम क्या हो?

"संसार में लङ्गड़े, लूले और अन्धे–असंख्य हैं।"

"यह आप क्या कहते हैं? जनगणना इसके विरुद्ध कहती है और यूँ भी हमारे ही नगर में दो लङ्गड़ों और एक अन्धे के सिवाय सब हृष्ट–पुष्ट और स्वस्थ हैं।

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

ऋग्वेद में राजधर्म

● शिव नारायण उपाध्याय

ऋग्वेद में कई स्थानों पर राजधर्म के विषय में बताया गया है कि परन्तु ऋग्वेद मंडल 8 सूक्त 26 तो पूरा ही राजधर्म का वर्णन कर रहा है। राजा का सबसे पहला धर्म अपनी प्रजा को आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराना है। राज्य में कोई भी व्यक्ति न तो भूखा सोवे और न नंगा बिना अपने घर के रहे। राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उचित व्यवस्था करना भी राज्य का धर्म है। राज्य में प्रत्येक नागरिक की जान–माल की सुरक्षा भी राज्य का धर्म है। आओ हम इस सूक्त में वर्णित विवरण से इस विषय को जानने का प्रयत्न करें।

युवोरु षू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु।
अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू।। 1।।

अर्थ– (अतूर्तदक्षा) हे अनिवारणीय शक्ति शाली (वृषणा) हे प्रजाओं पर धन की वर्षा करने वाले (वृषण्वसू) हे वर्षणशील धनयुक्त हे राजन। हे मंत्रिदल (युवोः रथम्) आप लोगों के रथ को (सूरिषु सध स्तुत्याय) विद्वानों की सभा में आदर करने के लिए (सु) साधु भाव से (हुवे) मैं बुलाता हूँ (उ) निश्चित रूप से।

भावार्थ– राजा का प्रथम कर्त्तव्य प्रजा को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न करना है। जो राजा अपने इस धर्म का पालन उचित ढंग से कर रहा हो उसका और उसके मंत्रियों का विद्वानों की उपस्थिति में स्वागत प्रजा द्वारा किया जाना चाहिए।

राजा को राज्य के हर भाग में भ्रमण कर प्रजा की वास्तविक स्थिति को जानने का प्रयत्न करना चाहिए और प्रजा की सभी समस्याओं का निवारण करना चाहिए। श्रेष्ठ लोगों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस धारणा का समर्थन दूसरी ऋचा कर रही है।

यूयं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या।
अवोभिर्याथो वृषणा वृषण वसू।। 2।।

अर्थ– (नासत्या) हे असत्य रहित (वृषणा) प्रजाओं पर धन की वर्षा करने वाले (वृषण वसू) हे वर्षणशील धन युक्त राजन् तथा मंत्रिगण। (यूयम्) आप सब (वरो) पुरुष (सुषाम्णे) सुन्दर गान करने वाले (महे) महान् (तने) विद्या धनादि विस्तार करने वाले मनुष्यों के लिए (अवोभिः) पालन के साथ अर्थात् रक्षक सेवा के साथ (याथः) यात्रा करते हैं।

भावार्थ– राजा का धर्म है कि संगीतकारों, साहित्यकारों और धार्मिक विद्वानों तथा अन्य श्रेष्ठ पुरुषों की आर्थिक सहायता करता रहे तथा उनकी रक्षा का भी विशेष प्रबन्ध करे।

राजा का यह भी धर्म है कि आपत्ति काल के लिए अन्न और धन का पर्याप्त संग्रह रखे।

ता वा मद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवरू।
पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः।। 3।।

अर्थ– (वाजिनी वसू) हे अन्नादि परिपूर्ण धन वाले राजन् तथा मंत्रिगण (ता वाम्) उन आप सबको (अद्य) आज (अति क्षपः) रात्रि के बीतने के पश्चात् अर्थात् प्रातःकाल (हवामहे) आदर के साथ बुलाते हैं। (हव्येभिः) स्तुतियों द्वारा आपका सम्मान करते हैं आप सब (पूर्वी, इषः) बहुत से धनों को (इषयन्तौ) इकट्ठा करने की इच्छा करें। राज धर्म यह भी है कि प्रजा में जहाँ–जहाँ खाद्य सामग्री की न्यूनता हो वहाँ–वहाँ राज दल अन्न पहुँचाने की व्यवस्था करे।

आ वा वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतोनरा।
उप स्तोमान्तुरस्य दर्शथः श्रिये।। 4।।

अर्थ– (नरा) हे मनुष्यों के नेता। (अश्विना) राजा तथा मंत्रीमंडल (वाम) आप सबका (वाहिष्ठ) अतिशय अन्नादि को ढोने वाला (श्रुतः) प्रसिद्ध (रथः) रथ (आयतु) प्रजाओं के घर पर आवे और आप (तुरस्य) श्रद्धा और भक्ति पूर्वक स्तुति करते हुए पुरुषों के (स्तोमान्) स्त्रोतों को (श्रिये) कल्याण के लिए (उपदर्शयः) सुनें।

भावार्थ– यह राज धर्म है कि देश के जिस भाग में अकाल की स्थिति बन गई हो उस भाग में जो भी साधन सुलभ हो उससे घर–घर खाद्य पहुँचाया जाए जिससे कोई भूख से न मरने पावे।

राजधर्म यह भी है कि दुराचारियों को पकड़ कर दण्ड देवे।

जुहुराणा चिदश्विना मन्येथां वृषण्वसू।
युवं हि रूद्रा पर्षथो अति द्विषः ।। 5।।

अर्थ– (वृषण्वसू) हे वर्षणशील धन युक्त (अश्विना) राजा एवं मंत्रीगण। (जुहुराणा चित्) कुटिल पुरुषों को (मन्येथाम्) विविध दूतों द्वारा जानें और उन्हें सत्पथ पर लावें। (रुद्रा) भयंकर (युवम्) आप दोनों मिलकर (द्विषः) परस्पर द्वेषी लोगों को सत्पथ पर लावें तथा उपद्रवकारी लोगों को दण्ड भी दें।

दस्रा हि विश्वमानुषङ्मक्षूभिः परिदीयथ।
धियञ्जिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती।। 6।।

अर्थ– राजा और मंत्रीगण (दस्रा) दर्शनीय और शत्रुओं का क्षय करने वाले हों। प्रजा की बुद्धियों और कर्मों को बढ़ावें। उनके वर्ण मधुर और सुन्दर हों। समय–समय पर जलों के प्रबन्ध कर्ता हों। राजा और मंत्रिगण शीघ्रगामी रथ और सेनाओं सहित प्रजा की सकल वस्तुओं की सर्वदा रक्षा करें और इसी से उनकी कीर्ति बढ़ती है।

जिस व्यक्ति का आचरण अच्छा न हो उसे तथा वाणिज्य आदि व्यवहार में कुटिल पुरुषों को दण्ड देना भी राजधर्म है।

अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित्ते श्रवतो हवम्।
नेदीयसः कूलायातः पर्णी रूत।। 10।।

अर्थ– (ऋषे) हे ऋषि। आप (अश्विना सु स्तुहि) राजा और मंत्रीगण के गुणों का अच्छी प्रकार प्रकाशित कीजिए। (ते) तेरी (कुवित हवम्) प्रार्थना को अनेक बार (श्रवतः) सुनेंगे (उत) और (नेदीयसः पणीन्) समीपी कुटिल गामी व्यापारियों को (कूलयातः) दण्ड देकर दूर कर देंगे। राज धर्म यह भी है कि कवि और विद्वानों को राज्य की ओर से पूज्य और पोषणीय माना जाए।

यो वामुरूव्यचस्तमं चिक्रेतति नृपाय्यम्।
वर्तिरश्विना परि यातमस्म यू।। 14।।

अर्थ– (यः) जो भक्तजन (उरूव्यचस्तमम्) बहु विस्तृत और बहु यशस्कर (नृपाय्यम्) मनुष्य ग्रहण योग्य स्तोत्र को (वाम्) आप लोगों के लिए (चिकेतति) जानता है। (अश्विना) हे राजा तथा मंत्रीगण (वर्तिः) उसके गृह को (अस्मयू) मनुष्य मात्र को चाहने वाले आप (परियातम्) जाकर भूषित कीजए।

राजा अपने कार्य को छोड़कर भी प्रजा का कार्य करे।

यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे।
श्रुतमिन्मे अमर्त्या ।। 17 ।।

अर्थ– हे चिर स्थाई यथोगुण युक्त पुरुष श्रेष्ठ राजा और मंत्रीगण। यदि आप सब उस विलास सागर में क्रीड़ा करते हों अथवा अन्न के भण्डार में आनन्द करते हों उस–उस स्थान में आकर मेरी स्तुति को सूना करो।

सूक्त में राजधर्म पर 27 ऋचाएँ हैं पर अब आगे विषय को विस्तार न देकर लेखनी को विराम देते हैं।

इति शम्।

73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान) 324009

☞ पृष्ठ 02 का शेष

अमृत–पान ...

"नहीं, अन्धे देखनेवालों की अपेक्षा अधिक हैं। टाँगोंवाली की अपेक्षा लूले–लङ्गड़े अधिक हैं।"

"गलत है, झूठ है। यह आप कैसे कह सकते हैं?"

सुनो! एक व्यक्ति के तीन लड़के थे। एक लंगड़ा और लूला था। उसके हाथ थे, न पाँव। वह अपने माता–पिता की कुछ भी सेवा नहीं कर सकता था। दूसरा अन्धा था, इसलिए वह भी माता–पिता की सेवा करने में विवश था, परन्तु तीसरा लड़का स्वस्थ, सुन्दर और बलवान् था। वही अपने माता–पिता की सेवा करता था और मान–सम्मान पाता था।

इसी प्रकार संसार मे तीन प्रकार के मनुष्य हैं–

1. एक तो वे हैं, जो आलसी, कञ्जूस और पापी हैं।

2. दूसरे वे हैं, जो विषय–लम्पट हैं, विषयों में फँसे हुए है।

3. तीसरे वे हैं, जो उदार हैं, बुद्धिमान् हैं और प्रत्येक की सहायता करने के लिए तैयार हैं।

अब देखो! जो आलसी, कञ्जूस और पापी हैं, वे तो लङ्गड़े और लूले हैं, क्योंकि वे न तो कहीं धर्मोपदेश सुनने जाते हैं और न हाथ से कुछ दान देते हैं। हाँ, घर ही बैठे पाप करते रहते हैं। ऐसे लोग अपने पिता परमेश्वर की कोई सेवा नहीं कर सकते।

जो विषय–लम्पट हैं, विषयों में फँसे हुए हैं, वही अन्धे हैं, क्योंकि वे भविष्य के विचार से आँखें बन्द किए हुए अपना विनाश आप ही कर रहे हैं। उनकी आँखों के आगे भोग–विलास और संसार के दूसरे पापों का पर्दा पड़ा रहता है, जिससे न तो वे अपने प्यारे पिता परमेश्वर को ही देख सकते हैं और न ही उनके हृदय में किसी की सेवा करने का विचार आ सकता है। ऐसे लोग सच्चे अर्थों में अन्धे हैं।

शेष रहे– उदार, बुद्धिमान् और दानी। केवल वे ही स्वस्थ, सुन्दर और बलवान् हैं। वे हाथों से दान देते हैं, पाँवों से चलकर धार्मिक मेलों में जाते हैं, दुखियों की सहायता करते हैं। वे बेबसों, अनाथ और पीड़ित लोगों को सहायता देते हैं और इस प्रकार अपने प्यारे पिता की सेवा करते हैं, ऐसे ही लोग वास्तव में मान–सम्मान पाते हैं। ईश्वर उनसे प्यार करता है और इन्हें ज्ञान देकर वह पद प्रदान करता है, जिसे मोक्ष कहते हैं।

अच्छा! अब तीनों प्रकार के लोगों पर दृष्टि दौड़ाकर बताओ कि संसार में लङ्गड़े, लूले और अन्धे अधिक हैं, या स्वस्थ?

"इस हिसाब से तो बहुत कम लोग स्वस्थ दिखाई देते हैं।"

"लोगों को छोड़ो, तुम अपने आपको देखो कि तुम लङ्गड़े हो, लूले हो या अन्धे हो या स्वस्थ?" इस प्रश्न का कुछ उत्तर न मिलते देखकर पुनः प्रश्न होता है, यदि तुम अब तक लङ्गड़े–लूले या अन्धे थे तो अब कोशिश करो कि तुम स्वस्थ हो जाओ और अपने पिता की सेवा करो।

.... क्रमशः

यज्ञ हुआ आजीवन, हुआ न जीवन यज्ञ

● देवनारायण भारद्वाज

दो मित्र उद्यान में बैठकर बात कर रहे थे, और अपने पूर्वजों की महिमा का बखान कर रहे थे। क्षितिज की ओर देखकर एक बोला– हमारे बाबा ने 'इतना बड़ा–इतना बड़ा' दालान बनवाया था, जो क्षितिज से भी आगे निकला हुआ था। दूसरा बोला हमारे बाबा भी बड़े चमत्कारी थे। उन्होंने 'इतना लम्बा–इतना लम्बा' बाँस बनाया था, जिसकी सहायता से आकाश में घुमाकर बादलों से वर्षा करवा लेते थे। पहले मित्र ने यह सुनकर पूछ लिया– वे उस बाँस को रखते कहाँ थे? दूसरे मित्र ने सहज भाव से उत्तर दे दिया– 'इसमें क्या कठिनाई, वे उसे रखते थे– तुम्हारे बाबा के दालान में। यह बात आज भी उन लोगों पर सटीक बैठती है, जो बड़े गर्व के साथ कह दिया करते हैं– हमारे बाबाजी पक्के आर्य समाजी थे। उनका हवन कुण्ड विशाल था, और उसकी धूम आसमान तक जाती थी। ऐसी एक घटना का मुझे सामना करना पड़ा।

सवर्ण वर्गीय सामाजिक संस्था के अधिकारीगण पर्व विशेष पर स्मारक पार्क में मुझ से यज्ञ का आग्रह करते चले आ रहे थे। वह दिन आ गया और मैं वहाँ पहुँच गया। पार्क की भीड़ में यत्र तत्र सजधज के साथ एक शीर्ष व्यक्तित्व यहाँ–वहाँ वार्ता में व्यस्त थे, वे समाज के सर्वाधिक सम्पन्नजनों में से एक थे। मैं जब यजमान के आसन को भरने के लिए आह्वान करने लगा; तो अधिकारियों ने उन्हीं महानुभाव को लाकर बैठा दिया। पहले से ही बैठे स्त्री–पुरुषों के समूह को हर्ष हुआ, और उन्हें यजमान पद प्राप्ति का गर्व हुआ। उन्हें देखकर यज्ञारम्भ की मेरी प्रक्रिया इसलिए रुक गयी, क्योंकि वे मुख में पूरा पान चबाते हुए आसन पर बैठ गए। वे मुझे भला क्या जानते होंगे, जो मैं सीधे उनसे मुख शुद्धि के लिए सचेत करता। यह कार्य मैंने मुख्य पदाधिकारी के माध्यम से कराया। आशीर्वाद–शान्ति पाठ सहित यज्ञ पूर्ण हुआ। वेदी पर तो उन्होंने दक्षिणा दी नहीं, किन्तु एक कक्ष में खड़े होकर संकेत से मुझे बुलाया और हाथ में दक्षिणा राशि निकालते हुए बताना प्रारम्भ किया– मेरे बाबा पक्के आर्यसमाजी एवं निष्ठावान याज्ञिक थे। लम्बी रेलयात्राओं में भी नित्यकर्म से निवृत्त होकर यज्ञ अवश्य करते थे, इसके लिए उनकी यज्ञपेटिका साथ चलती थी। मैंने कहा बहुत सुन्दर। **'वयं स्याम पतयो रयीणाम्'** (ऋ.10,121,10) के जाप से ही तो आप धनैश्वर्यों के स्वामी बने हैं। मैंने मन में सोचा– अपने बाबा के धन को तो पकड़ लिया किन्तु यज्ञ–ऐश्वर्य को छोड़ दिया।

यज्ञ करने से भी क्या होता है। सर्वांश में नहीं, अधिकांश में यज्ञ करने वाले 'स्वाहा–इदन्नमम' का उच्चारण करते हुए घृत–सामग्री की आहुतियाँ लगाते रहते हैं तथा इसकी सुगंध को भी फैलाते रहते हैं; और इस प्रकार वे बाह्य वातावरण को तो शोधित कर लेते हैं; किन्तु इसके सार स्वत्व से अपने अन्तःकरण की **परिशोधन–प्रक्रिया पर किञ्चित ध्यान नहीं देते हैं; और जो मन्त्रोच्चारण करते हैं, उससे उनका आचरण उत्कृष्ट न होकर** कृष्ट या निःकृष्ट ही बना रह जाता है। यही कारण है घर–परिवार हो अथवा संगठन सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में देव पूजा (बड़ों का मान) पारस्परिक संगतीकरण एवं दान के दुरुपयोग के उदाहरण परिलक्षित होते हैं। इसी यज्ञ–वेदी पर सरदार अर्जुन सिंह, पौत्र सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल ही नहीं पूर्वज आर्य मनीषियों ने प्रेरणा–प्रोत्साहन प्राप्त कर वेदोत्थान व राष्ट्र–निर्माण के लिए अपने जीवन अर्पित कर दिए थे, उनके समर्पण की नींव पर संगठन का प्रासाद तो खड़ा हो गया, किन्तु आज उसकी दीवारों में लगी दीमक से रक्षा करने वालों की प्रतीक्षा बनी रहती हैं।

स्थिति इतनी निराशाजनक भी नहीं है। जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है, और जैसे एक बूँद विष सम्पूर्ण दुग्ध–घट को विषैला कर देती है, वैसे ही थोड़े स्वार्थी अभियोगवादियों ने विराट संगठन को विघटन का जामा पहना दिया लगता है, अन्यथा आज भी गुरुकुल, व शिक्षा जगत के आचार्य–ब्रह्मचारी–उपदेशक राष्ट्र में अपने आदर्श से आर्यकरण के अभियान में लगे हैं। देश–विदेश–राष्ट्र–संघ सर्वत्र विश्व–अहिंसा दिवस, विश्व योग दिवस, वेद संहिता संरक्षण, अग्नि होत्र एवं शाकाहार दिवस आदि के रूप में सात्विक संस्कार जागरण के अभियान चल पड़े हैं।

यज्ञनिष्ठ लोग चलती ट्रेन में भी अपना दैनिक यज्ञ कर लेते हैं। वैसे ही रामायण प्रेमी लोग भी प्रभात काल में स्वच्छ होकर रामायण का पाठ करके ही सुख शान्ति अनुभव करते हैं। मन्त्रों के अर्थों को समझना पड़ता है पर रामायण तो लौकिक भाषा में अर्थ स्पष्ट करती चलती है। यह सहज सुबोध अर्थ भी जीवन व्यवहार में उतरना दुर्लभ होता है। इसमें भी आर्योपदेशक यदा कदा मार्ग दर्शन करते देखे जाते हैं। प्रयागराज एक्सप्रेस के आरक्षण श्रेणी में ऐसे ही एक यात्री अपनी सीट पर बैठकर उच्च स्वर में रामायण का पाठ करते जा रहे थे और भाव विह्वल होकर आँसुओं की लड़ी बहाते जा रहे थे। यह देखकर उपदेशक महोदय ने उनकी रामायण–निष्ठा की प्रशंसा की और पाठ–प्रसंग जानने की इच्छा की। रामायणी जी ने बताया– इस समय राम–भरत मिलाप का प्रसंग चल रहा है। निश्चल प्रेम प्रवाह को अनुभव कर मेरे नेत्रों से अश्रु प्रवाह हो गया। अच्छा तो आप प्रयागराज तीर्थ में त्रिवेणी–स्नान के लिए जा रहे होंगे। यात्री ने कहा– नहीं। अच्छा तो पवित्र भारद्वाज आश्रम दर्शनार्थ जा रहे होंगे। यात्री ने कहा– नहीं। प्रादेशिक शिक्षा निदेशालय या राज्य लोक सेवा आयोग मुख्यालय में किसी काम से जा रहे होंगे। यात्री ने कहा– नहीं। फिरतो प्रयागराज विश्वविद्यालय में अपने किसी प्रोफ़ेसर मित्र से मिलने जा रहे होंगे। यात्री ने कहा– नहीं; और आगे प्रसंग को न बढ़ाते हुए वे बोल पड़े। महाशय! आपको पता नहीं– प्रयागराज में उच्च न्यायालय भी है। मैं वहीं जा रहा हूँ। उपदेशक जी बोले तो आप प्रयागराज नहीं इलाहाबाद जा रहे हैं।

अच्छा तो यह बताइए वहाँ आपका क्या प्रकरण लम्बित चल रहा है? क्या बताएँ बड़े भाई से एक लघु भूखण्ड के लिए अभियोग चल रहा है। दसियों वर्ष हो गए– निर्णय नहीं हो पा रहा है। पड़ोस में रहते हुए भी बोलचाल बन्द है। उपदेशक जी ने कहा– राम–भरत मिलाप से तो आप इतने प्रभावित हैं कि अश्रुपात कर बैठते हैं। आपने कभी सोचा है कि अयोध्या जैसे चक्रवर्ती साम्राज्य के सिंहासन को दोनों भाइयों ने गेंद के समान ठोकर मारते हुए एक खेल बना दिया था। भरत ने अयोध्या से दूर नन्दीग्राम में एक तपस्वी के रूप में राम की प्रतीक्षा करते हुए शासन संचालन किया था। एक ओर राम–भरत की मिलाई पर भावुकतावश रुलाई करते हैं और अपने ही बड़े भाई से लड़ाई करते है। मेरा परामर्श है आगे से या तो रामायण की पढ़ाई बन्द या बड़े भाई से लड़ाई बन्द। स्टेशन आया। उपदेशक जी ने उतरते उतरते आर्य समाज चौक जाने की बात कहते हुए विदाई ली। न्यायालय पहुँचने पर बड़े भाई जी वहाँ उनकी प्रतीक्षा करते मिले। दसियों वर्ष बाद छोटे भाई ने बड़े भाई के चरण पकड़े और क्षमायाचना की और बोले आज से भूखण्ड आपका है। अभियोग समाप्त होता है। मुझे आपका अखण्ड प्रेम चाहिए–भूखण्ड नहीं। अब साथ–साथ हँसते हुए वापस लौटेंगे। पहले आर्यसमाज चौक चलकर उपदेशक जी से मिलकर उनका आभार व्यक्त करते हैं। दोनों भाई वहाँ जाकर उपदेशक से मिलते हैं। उन्हीं के समक्ष बड़े भाई घोषणा करते हैं कि छोटे भाई का परिवार बड़ा है– इन्हें आवश्यकता है इसलिए भूखण्ड इनके परिवार के लिए छोड़ता हूँ। आर्योपदेशक ने प्रत्यक्ष घटित कर दिया– भरत मिलाप।

उस संध्या उपदेशक महोदय ने जिस प्रवचन को प्रस्तुत किया वह निम्नांकित मन्त्र पर आधारित था। प्रयाग में याग चर्चा यू हुई:–

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन

कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो

यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजाऽअभूमस्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम।। (यजु. 9.21)

भावार्थतः हमारा सम्पूर्ण जीवन यज्ञ से श्रेष्ठकर्म से समर्थ हो प्राणों की शक्ति, दर्शन शक्ति, श्रवण शक्ति, पृष्ठ–पीठ सभी यज्ञ से समर्थ हों। हमारे सभी क्रियाकलाप यज्ञ से समर्थ हों। हम प्रजापति परमेश्वर की सच्ची प्रजा बनें। स्वयं देवस्वरूप बनकर अपने को ही नहीं अन्यों को भी सुखी बनाने में समर्थ हों तथा जीवन मुक्ति के साथ अमृतत्व को प्राप्त करें। हम ऐसे उत्तम कर्म करें कि विद्वानों से हमें सदैव शाबासी मिलती रहे। हम अपने जीवन को यज्ञ का आकार–प्रकार देते हुए प्रभु–प्रजा सभी को प्रसन्न बनाने के लिए क्षमता भर उद्यत रहें। इस यज्ञीय भावना को रचनात्मक रूप देने के लिए साधनविहीन व्यक्तियों के उदाहरण तो बहुत मिल जाते हैं; किन्तु सुसम्पनन सज्जन भी सुलभ होते रहते हैं। यज्ञ को आचमन से आरम्भ करने वाले याज्ञिक जल के अमृत रूप को समझकर नित्य ब्रह्मामृत में सराबोर होने की कामना करते हुए स्वाहा का सुख–वोधन करते हैं। उस दिन यह यज्ञ क्रिया फलित होती देखी गयी, जिस दिन सन्त एकनाथ पैदल गंगोत्री से कन्धे पर गंगाजल की काँवर लेकर रामेश्वर जी पर चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने वही जल मरुस्थल में प्यास से तड़पते गधे को पिला दिया, और वह उठकर चल दिया। साथी साधुओं की निन्दा नकारने में सन्त

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

भारतीय स्वप्नद्रष्टा मोदी–योगी–योगर्षि और उनके कर्तृत्व

● रवीन्द्र पोतदार

अर्थात् सत्यपूर्वक हर्षित और आनन्दित होते हुए अपने कृतृत्व से सत्यार्थ का प्रकाश करना। सर्वथा–सर्वदा सत्य का ही भाव विद्यमान होता है असत्य का नही। सर्वदा सत्य की विजय और असत्य की पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है।

भारत का ही नही सम्पूर्ण विश्व का दुर्भाग्य है कि ''सत्यार्थप्रकाश'' की रचना के लगभग 135 वर्षों पश्चात् भी ''प्रजातन्त्र, स्वातन्त्र्य, धर्म, योग, जाति, राष्ट्र, एकता–अनेकता, विकास–उन्नति, मानवता–प्रेम, निष्पक्षपात, आध्यात्म, अहिंसा– न्याय, अनुशासन आदि–आदि अनेक शब्द क्यों अब तक अनर्थवाची होकर असत्यार्थ में प्रयुक्त हो रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि दयानन्द से लेकर आर्य–समाज के अमरस्वामी (सन 1870 से 1990) तक सैकड़ों दिग्गजों ने इनसे अधिक विषयों पर लगातार दिग्विजय करते हुए सफलतम शास्त्रार्थ–मुबाहिंसा किया है। वे कभी पराजित हुए ही नहीं यह आश्चर्यतम् हैं। (क्यों गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स का ध्यान इस ओर नहीं गया?) विदेशियों की क्या कहनी हमारे तो देशी नेता भी इस तथ्य से वाकिफ् नहीं हैं, और जिन्हें जानकारी है वे अपनी दुकानदारी बचाने के लिए इससे किनारा करते हैं। नाम आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश–वेद–योगशास्त्र और आयुर्वेद का लेते हैं परन्तु ढपली अपनी बजाते हैं।

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के गांधी समेत नेता विदेशों से पढ़ एवं गढ़ के आए थे। महर्षि दयानन्द के कसीदे पढ़ते और उन्हें स्वतन्त्रा का प्रथम उद्घोषक (दृष्टव्य स.प्र. समु.11) मानते, भारत के ''राष्ट्र पितामह '' का गौरव देते परन्तु उनकी कालजयी रचना की और शास्त्रार्थों की अनदेखी करने थे और हैं क्यों? क्या यह पक्षपात नहीं है? वेद और सत्यार्थ प्रकाश में एक भी शब्द अमानवीय एवं निन्दापरक नहीं है। वे मानवमात्र के कल्याणार्थ बने हैं तथा सार्वदेशिक सार्वभौमिक एवं सार्वजनिक हैं।

देश–विदेश के हिन्दू–मुस्लिम–ईसाई आदि अनेक विद्वानों ने इनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की परन्तु हमारे नेताओं ने इन पूर्णतः मानवीय–पन्थ निरपेक्ष एवं पक्षपात से सर्वथा रहित, मानव कल्याण की इन अक्षुण्ण निधियों की हमेशा उपेक्षा की, जिसका परिणाम आज की विस्फोटक स्थितियाँ है। ये वास्तविक पुरातत्व एवं संरक्षणीय है परन्तु हम महलों, मंदिरों एवं किलों तथा उनमें पाये जाने वाले विवादित लेखों को ही पुरातत्वीय वस्तु मान बैठे हैं। धिक्कार हमारी सोच को, सच्चे पुरातत्वीय ज्ञान को संरक्षण नहीं दे सकते? सत्यार्थ प्रकाश का आधार मनुस्मृति है और हमारा संविधान मनुस्मृति को बैसाखी बनाकर प्राप्त हुआ है, अतः जिस दिन वह पूर्णतः मनु पर आधारित हो जाएगा उस दिन से अच्छे दिन दिखाई दे जाएँगे। सुधार तो हो रहे हैं– धर्म की जगह पन्थ निरपेक्ष आदि लगभग 150 सुधार अब तक हुए हैं परन्तु अपरिमित बांकी हैं। ईश्वर–धर्म–पंथ अनेकता में एकता, निरपेक्ष, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, विचार–विश्वास–धर्म–अवसर की समानता, आत्मा आदि अनेक शब्द सत्यार्थ चाहते हैं। परन्तु विश्व में मनुस्मृति एक मात्र ऐसा संविधान है जिसमें मनु–राम तथा कृष्ण काल, लगभग 1 अरब 96 करोड़ वर्षो में एक भी सुधार की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि वह पूर्णतः वेदाधारित है। अतः अक्षुण्ण है। इसका मात्र एक ही उदाहरण इसे पंथनिरपेक्ष, मानवीय, पक्षपात रहित एवं सर्वजन (मनुष्य मात्र) के लिए हितकारी एवं माननीय सिद्ध करने के लिए काफी है–

आज के युग में कोई भी पंथाई दूसरे के मत का पोषक नहीं है तभी तो अनेकता है। अतः ऐसा मत–संप्रदाय– या पंथ जो अनेक पंथों की हामी या सम्मति में ही अपना धर्म मानता हो, किसे मान्य नहीं होगा? मनुस्मृति में आर्यों का या मनुष्य मात्र का जो धर्म बताया गया है वह ऐसा ही सर्व सम्मत मत था। इसे नागरिक क्या नेता चाहे वे किसी भी पार्टी के हों निष्पक्ष हो कर अवश्य मानेंगे। जो सभी पन्थ और सम्प्रदाय माने वह आर्य का मानव धर्म और जो एक भी असहमत होवे वह धर्म नहीं, यह इसका मूलभूत सिद्धान्त है।

धर्म सत्य मूलक होता है तथा प्रमाण और परीक्षण से जो धर्म सत्य ठहरे वही सत्य है। धर्म और अधर्म अनेक हैं परन्तु उनमें से विशेष रीति से ग्यारह धर्म और इतने ही अधर्म हैं, और ये सनातन हैं। अब तक के तमाम आर्यों ने इनको माना है, पालन किया है।

1) **अहिंसा–** इसका '' पशु आदि न मारना '' ऐसा संकुचित अर्थ नहीं है परन्तु '' वैर त्याग करना'', यथा–न्याय करते हुए अपराधी को भयंकर दण्ड देना वा युद्ध में दुश्मनों को मारना आदि।

2) **धृति–** राज्य जाए तो भी धर्म का धैर्य नहीं छोड़ना ऐसा नहीं करने से धर्म का पालन नहीं होता है।

3) **क्षमा–** अर्थात् सहन करना। बड़े ने कोई अपकृत्य छोटे मनुष्य के लिए किया तो उसे छोटे ने सहन कर लिया, यह क्षमा नहीं है। इसे असामर्थ्य कहते हैं। किन्तु शरीर में सामर्थ्य होकर बुरे का प्रतिकार न करना यही क्षमा है।

4) **दम–** मन की वृत्तियों का निग्रह करना, अर्थात् मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म करने से रोक देना, अधर्म करने की इच्छा भी न उठे।

5) **अस्तेय–** चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल कपट विश्वासघात वा किसी व्यवहार तथा वेद विरूद्ध उपदेश से (जैसे वेशधारी साधु वा पंडित करते हैं) पर पदार्थ का ग्रहण करना चोरी और उसको छोड़ देना साधुकारी कहाती है (यही बात नेता गणों के लिए भी है।

6) **शौच–** दो प्रकार का है। शारीरिक और मानसिक। उत्कृष्ट रीति से स्नानादिक विधि का आचरण करना यह शारीरिक शौच है। किसी भी दुष्ट (विपरीत–अमानवीय) वृत्ति को मन में आश्रय न देना, राग द्वेष –पक्षपात छोड़ना यह मानसिक शौच है। शरीर स्वच्छ रखने से रोग उत्पन्न नहीं होते तथा मानसिक प्रसन्नता भी रहती है।

7) **इन्द्रिय निग्रह–** सारी इन्द्रियों को न्यायपूर्वक वश में रखना, अधर्माचरणों से रोक कर सदा धर्म में ही चलाना। इन्द्रियों का आकर्षण परस्पर संबंध से होता है जिसमें अत्यंत सावधान रहना चाहिए।

8) **धी–** अर्थात् बुद्धि। सब प्रकार बुद्धि बल का क्या लाभ? इसलिए शरीर बल सम्पादन करने के लिए और उसकी रक्षा करने के लिए बहुत प्रयत्न करना चाहिए। मादक द्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ, दुष्टों का संग, आलस्य प्रमाद आदि को छोड़ कर श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, जो मात्र आसन–प्राणायाम नहीं वरन अष्टाङ्ग योग अर्थात यम–नियम–आसन'' स्थिर सुखपूर्वक बैठना'' प्राणायाम'' मात्र– प्रच्छर्दनविधारणाभ्याम् वा प्राणस्य'' हैं अन्य नहीं प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधी, धर्माचरण ब्रह्मचर्य आदि शुभ कर्मों से बुद्धि का बढ़ाना।

9) **विद्या–** अविद्या अर्थात् विषयासक्ति, ऐश्वर्यभ्रम, अभिमान यह बड़े–बड़े ग्रंथों के वाक्यों को रट कर बोलने से ही विद्या उत्पन्न नहीं होती, यह विद्या का साधन है। यथार्थ दर्शन–यथा विहित ज्ञान, उस पर आचरण करना, यह विद्या है। विद्या में भ्रम नहीं होता। अनात्मा में आत्म बुद्धि तथा अशुचि (अपवित्र) पदार्थ में पवित्र बुद्धि यह अविद्या है और इससे विपरित जैसे को तैसा जानना विद्या है।

पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यंत यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य, न कम न ज्यादा उपकार लेना, जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में वर्त्तना किया है इससे विपरीत अविद्या है।

10) **सत्य–** जो पदार्थ वा विषय आदि हो उसको वैसा ही समझना वैसा ही बोलना और वैसा ही करना भी। असत्य का त्याग करना चाहिए। सत्य भाषण करना चाहिए ओर सत्य आचरण तो करना ही चाहिऐ। किसी प्रकार का विकल्प नहीं होना चाहिए। संभव– असंभव का विचार करना चाहिए जैसे कुम्भकरण को मूँछे एक योजन व नाक 4 योजन बड़ी थी तथा सतयुग में 1200 योजन के मुनि होते थे, आदि असंभव को संभव मानना विकल्प है।

11) **क्रोध–** बड़ा भारी जो क्रोध उत्पन्न होता है, उसका सर्वथा त्याग करना चाहिए। स्वाभाविक क्रोध कभी नहीं जा सकता, परन्तु उसे भी रोकना मनुष्य का धर्म है। क्रोधाधीन होने से बड़े–बड़े अनर्थ होते हैं। शांति आदि गुणों का ग्रहण करना चाहिए। मच्छर काटते हों उन्हें मारना या भगाना हिंसा और क्रोध नहीं समझना चाहिए।

शांति और क्रांति विरूद्धार्थी नहीं हैं। परमात्मा शांत भी है और क्रांतदर्शी भी है। ''द्यौ.शांतिः'' अर्थात् जो वायुमण्डल है उसमें अशांत –विरुद्ध गैसेस आदि को बढ़ाने वाले कार्य एवं उनके कर्त्ताओं पर अगर कोई त्वरित–ठोस एवं आक्रामक कार्यवाही होती है जो अंत में उसे शांत अर्थात् अपने स्वरूप में ला दे उसे क्रांति कहेंगें, अनावश्यक उपद्रव को नहीं, जो शांति भंग कर दे।

संस्कृत वाङ्मय में सभी शब्दों के अर्थ उपलब्ध हैं परन्तु आलस्य और प्रमादवश हमने अनर्थ कर दिए हैं एवं उन्हें संविधान में स्थापित कर बिना उहा–पोह के लागु करने का दुस्साहस कर रहे हैं। आजकल "कामन सिविल कोड" की चर्चा जोरों पर है। परन्तु उसके लिए जो आधार और परिप्रेक्ष्य हम दर्शा रहे हैं वह नाकाफीएवं असंगत है। "अनेकता में एकता हमारी संस्कृति है" ये विरुद्धार्थी वाचक वाक्य कहकर हम क्या संदेश देना चाहते हैं? मनुष्य देवता और राक्षस, इनमें मनुष्य और देवता एक पथ गामी हैं अतः उनकी सभ्यता एक हैं। परन्तु राक्षस दुष्ट–पापी–नीच और स्वार्थी की

शेष पृष्ठ 06 पर

वेद के प्रादुर्भाव की कहानी–3

● भद्रसेन

स्तुता मया वरदा वेदमाता। अथर्व–19,71,1

शब्दार्थ–

मया = मैं ने वरदा = वर देने वाली, अच्छाई बताने वाली वेद–माता = वेद रूपी माता अर्थात् ज्ञान द्वारा जीवन को बनाने वाली, सफल करने वाली, ज्ञान द्वारा जीवन को चमका कर दूसरा जन्म देने वाली (ऐसी ज्ञान (वेद) रूपी माता को मैंने) स्तुता = प्रस्तुत किया है, ऐसे वेद का मैंने वर्णन किया है। (यह वेदमाता अपने ज्ञान द्वारा) द्वि जानाम् = दूसरी बार जन्म प्राप्त करने वाले, शरीर प्राप्ति के पश्चात् बौद्धिक विकास रूपी दूसरा जन्म प्राप्त करने वाले, जन्म की सफलता के दुहरे अवसर को प्राप्त करने वाले मनुष्यों को पावमानी = पवित्र करने वाली, उनकी उलझनों, संशयों, भयों, भ्रमों को दूर करने वाली है।

ऐसी वेदमाता में – आयुः = जीवन, उम्र से जुड़ी बातें प्राणम् = साँस लेने छोड़ने से सम्बद्ध वर्णन पशुम् (पालतू–दूसरे) पशुओं विषयक विचार कीर्तिम् = यश, नेकनामी, प्रशंसा देने वाली बातें द्रविणम् = (जीवन की) गतिविधि, जरूरतों की पूर्ति के साधन रूप धन विषयक बातों को और ब्रह्मवर्चसम् = बड़ी चीज की तरह स्थान रखने वाली विद्या की सार्थकता से सम्बद्ध बातों को परिचय के रूप में मह्यं दत्त्वा = मुझ ज्ञान की इच्छा रखने वाले को देकर अर्थात् तुम इन ज्ञानों से भरपूर होकर ब्रह्मलोकम् = ज्ञान के क्षेत्र में, विकास के आकाश में व्रजत = पहुँचो, उड़ान भरो, जाओ, प्रगति करो। ज्ञान को व्यावहारिक रूप में प्राप्त करके जीवन को सफल बनाओ। प्रचोदयन्ताम् = (सर्वांगपूर्ण प्रगति कराने वाले ज्ञान से जो–जो लाभान्वित हुए हैं, चमके, कृतकृत्य हुए, अनुभवी बने) वे सभी ऐसे वेद ज्ञान का प्रचार–प्रसार करें।

विशेष –

इस मन्त्र में प्रचोदयन्ताम् जहाँ प्रथम पुरुष के बहुवचन की क्रिया है, तो वहाँ व्रजत मध्यम पुरुष के बहुवचन की क्रिया भी है। इन दोनों की स्थिति को ध्यान में रखकर ऐसा अर्थ किया है।

व्याख्या –

इस मन्त्र में भी निर्देश किया गया है, कि ईश्वर ने ही वेदज्ञान दिया है। जो माता की तरह अन्तः चेतना, संस्कार, प्रेरणा देकर निर्माण की मंजिल को उजागर करता है।

आजकल हम सब स्थानों पर देखते हैं कि हर एक व्यक्ति दूसरे सिखाने वाले व्यक्ति से सीखता है, ज्ञान प्राप्त करता है। जिस को गुरु, शिक्षक आदि कहते हैं। हाँ, शिक्षा प्राप्त करने वालों में से कुछ जल्दी–जल्दी पढ़–लिख जाते हैं और कुछ देर से पढ़ते हैं। पर सभी एक समान रूप से किसी न किसी निमित्त = सहायक, शिक्षक से ही सीखते हैं। इसीलिए मनुष्यों का ज्ञान नैमित्तिक कहा जाता है। पढ़ने–लिखने का यह नियम सर्वत्र समान रूप से एक जैसा चल रहा है। किसी को भी दूसरों से सीखे बिना अपने आप ज्ञान नहीं आता। अतः नियम अटल–अटूट है, सभी पर लागू होता है। यह जब आज सभी स्थानों पर समान रूप से लागू है। इस का अर्थ है कि पूर्व काल में भी ऐसा ही होता था। यह इतिहास के प्रमाणों से भी प्रमाणित होता है। तभी तो हम पढ़ते है, कि श्री राम जैसों ने भी गुरु वशिष्ट जैसों से ही शिक्षा प्राप्त की थी। योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने भी औरों की तरह सुदामा आदि के साथ गुरु सन्दीपनि जी से शिक्षा प्राप्त की थी।

पुनरपि प्रकृति के इस अटल नियम को ओझल करके कुछ अपनों को अनोखा सिद्ध करने के लिए उन के स्वयं सिद्ध होने की कल्पना करते हैं। जब भी इस संसार में मनुष्यों की परम्परा प्रारम्भ हुई। तब इस अटल नियम के अनुसार उस समय शुरू में ईश्वर के अतिरिक्त और कोई सिखाने वाला नहीं था। इस स्थिति में ईश्वर ने ही तब ज्ञान की परम्परा को प्रारम्भ किया। इसी स्थिति को सामने रखकर वेद ने स्तुता मया वरदा वेदमाता– मन्त्र से सारे स्वारस्य को स्पष्ट किया है। यह अनोखा ज्ञान ही हमें जीवन और उससे जुड़ी हुई जरूरतों का परिचय देता है।

आयु शब्द के चरक में अनेक पर्याय दिए गए हैं। जिन में जीवित, त्रिदण्ड भी हैं। जीवित में आत्मा – अन्तःकरण इन्द्रिय का तालमेल, टिकाव, स्थायित्व होता हैं। यह जब तक टिका रहता है, इसी को आयु, उम्र भी कहते हैं। इसमें प्राणों का भी योगदान है तथा श्वास–प्रश्वास के चलने से ही जीवन की पहचान होती है। शरीर का संचालन और स्वास्थ्य की सुरक्षा, विकास भी प्राणों द्वारा होता है। प्रजा–जीवन में वहाँ सहयोगी हैं, वहाँ वह अपनी परम्परा की प्रतिनिधि भी होती है। प्रजा के माध्यम से अपनी इच्छाएँ और परिवार के पूरणें पूर्ण होते हैं।

पशु– हमारे भोजन के अन्न – उत्पादन, दूग्ध–प्रदान, खाद– औषधी में भी सहयोगी हैं। कीर्ति–कामना भी जीवन का एक लक्ष्य है। तभी तो प्रत्येक सम्मान भरा जीवन चाहता है। द्रविण– भौतिक द्रव्यों के लेन–देन का धन एक मुख्य मानदण्ड है। ब्रह्मवर्चस– सार्थक ज्ञान से ही जीवन सफल होता है। मन्त्र निर्दिष्ट ये सारे जीवन को पूर्ण बनाते हैं। इन सब से पूर्ण ही ज्ञान के आकाश में, जीवन की सफलता में ज्ञान का महत्व स्पष्ट है। तभी तो कहा है, कि जिन्होंने इसका अनुभव कर लिया। वे ही इस वेदज्ञान का प्रचार–प्रसार करें। प्रभु हमें इसमें सफल बनाए, जिससे हम वेद को अपनाने में सफल हों।

182–शालीमार नगर,
होशियारपुर – 146001

☞ पृष्ठ 05 का शेष

भारतीय स्वप्नद्रष्टा ...

सभ्यता भिन्न है वे असंस्कृत हैं अतः ये कभी हमसे एक नहीं हुए और देव–दानव युद्ध हमेशा होता रहा है, हो रहा है एवं होता रहेगा। अतएव "कामन सिविल कोड" अर्थात् मानवीय संवेदना सहित तथा विकल्प में सवेदनहीन ऐसा प्रयोग करना होगा। संवेदनशीलता का आधार उपरोक्त 11 ग्यारह लक्षणों में निहित है जिसमें किसी को आपत्ति नहीं होगी साथ ही वे हमारे संविधान विहीन भी हैं। शासन, संविधान विशेषज्ञ एवं न्याय पालिका स्वयं संज्ञान पूर्वक इसका विश्लेषण कर उचित कदम उठावें।

जनसंघ से BJP अथवा NDA तक का जो रास्ता जनता पार्टी द्वारा होता हुआ आज मोदी–शाह युग तक आया है, इसका सही विश्लेषण तो इतिहासविद् समय पर करेंगे। मोदी–योगी सहित आज जो इनके मुख्य मंत्रियों के रूप में भूमिकाएँ है तथा प्रधानमंत्री के रूप में आज अंतर्राष्ट्रीय छवि भारत की उभरी है वह अत्यंत सराहनीय है। परन्तु 5 राष्ट्रों ने जर्मनी का विध्वंस कर विश्व–विजय की एवं उसे अक्षुण्ण बनाने हेतु तथाकथित यु एन ओ तथा शांति सेना की स्थापना की उसको शाश्वत स्वरूप देने में भारत को गुट–निरपेक्ष रहते हुए समान विचार वालों के साथ मिलकर एक बड़ी भूमिका अदा करना काफी है। अंतर्राष्ट्रीय छवि के लिए आपके अंतर्निहीत सिद्धांतों एवं कर्त्तव्यों (धर्मों) का सार्वभौमिक होना नितांत आवश्यक है। अतएव उपरोक्त धर्म के लक्षणों को अंतर्निहित कर आगे बढ़ना होगा।

निषेध यह अधर्म, न्याय यह धर्म, अन्याय यह अधर्म, सत्य यह धर्म, असत्य यह अधर्म, निष्पक्ष यह धर्म, पक्षपात यह अधर्म है।

योग एवं आयुर्वेद के माध्यम से इसमें सहायता मिल सकती है परन्तु वे छद्म अर्थात् सिद्धांत रहित होने पर दिखावा मात्र होगा। हमे वास्तव में पुरातत्वीय वेदभुर्त एव योग के अनुसांधन का, उसका प्रचार करना होगा। योग में महर्षि पतंजलि वर्णित अष्टाङ्ग एव आयुर्वेद में बताए गए चतुष्पाद तथा धर्म के उपरोक्त ग्यारह स्तंभ की सिद्धि भी बिना ईश्वर सिद्धि के संभव नहीं है अर्थात् आस्तिक्य के अभाव में उपरोक्त कार्य असंभव है।

चन्देसरा – 456664

☞ पृष्ठ 04 का शेष

यज्ञ हुआ आजीवन,...

एकनाथ ने क्षण भर की देर नहीं लगायी। देखो साक्षात् गंगाधर रामेश्वर भगवान यहीं तृप्त होने आ गए और मुझे काँवर के बोझ से मुक्त कर दिया।

क्या आपको नहीं लगता– "स विशोऽनुव्यचलत" (अथर्व 15.9.1) वह व्रात्य परमात्मा ऐसे आस्थावान भक्तों की ओर विचरणशील हो जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर–योगीराज कृष्ण की भाँति ही यज्ञ प्रेमी थे। राजसूय यज्ञ इसका संकेतक है। उनके जीवन में यज्ञ ज्योति जाज्वल्यमान थी। महाभारत जैसे युद्ध के मध्य भी वे लड़ाई के बाद रात्रि में वेश बदलकर घायल सैनिकों की पीड़ा कम करने के लिए युद्ध क्षेत्र में चले जाते हैं। एक दिन अनुज सहदेव ने इस निमित्त उन्हें वेश बदलते देख लिया और कहा– यह तो ठीक है कि आप घायलों की वेदना कम करने के लिए जाते हैं; किन्तु वेश क्यों बदलते हैं? उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने असली वेश में जाऊँगा; तो शत्रु सैनिक मेरी इस सेवा को ठुकरा सकते हैं। उस दिन सहदेव ने भी यज्ञ–धर्म के रहस्य को समझ लिया था। हमने स्वाहा को कितना सराहा–आइए विचार करें।

"वरेण्यम्" अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ उ.प्र.

देश की आज़ादी और हमारी शिक्षा

● डॉ. विजेन्द्रपाल सिंह

देश 1947 में स्वतन्त्र हुआ यह स्वतन्त्रता सहस्रों बलिदानियों की तपस्या से मिली। प्राचीन काल में यह देश धन सम्पदा व ज्ञान विज्ञान में धनी था विदेशी लोग यहाँ शिक्षा हेतु आते थे यहाँ अनेक गुरुकुल व विश्वविद्यालय तक्षशिला तथा नालन्दा जैसे स्थित थे बड़े-बड़े संग्रहालय, पुस्तकालय, वेधशालाएँ आदि थे। विदेशियों ने इस देश को खूब लूटा पद दलित किया रोंदा और यहां से पाण्डुलिपियों ग्रन्थों को धन सम्पदा आदि को लूट कर ले गए। धरती को रक्तरंजित किया, मतान्तरण किए संस्कृति को मिटाना चाहा और आज भी वही प्रयत्न किया जा रहा है। हमारी शिक्षा जो विश्व में अद्वितीय थी उसे पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास किया।

किसी व्यक्ति व राष्ट्र की उन्नति का मार्ग शिक्षा व ज्ञान विज्ञान है। हमारे यहाँ ऐसी महानतम शिक्षा वेद का ज्ञान था, जो प्राचीन काल में गुरु शिष्य परम्परा द्वारा गुरुकुल आश्रम व विद्वानों में यहाँ तक कि समाज व परिवारों में भी प्रवाहित होता रहा। शनैः शनैः जब इस ज्ञान का प्रचार प्रसार कम होने लगा। जब तक वेद की शिक्षा पर हम चलते रहे यहाँ चक्रवर्ती शासक होते रहे पृथ्वी पर चारों ओर सुख व शान्ति थी परन्तु वेद ज्ञान क्षीण होते ही राज्य व्यवस्था डगमगा गई राजा व मन्त्री अवैदिक मार्ग का आचरण करने लगे राज्याधिकारी वेद का आचरण छोड़ अवैदिक मत पर चलने लगे। काम, क्रोध, लोभ व मोह में फँस गये प्रजा दुखी हो गई।

प्राचीन काल में भाई ने भाई के लिए राज सिंहासन को ठुकरा दिया था। राम ने भरत को राज्य सत्ता समर्पित कर दी और स्वयं पिता की आज्ञा को कैकेयी के वरदान माँगने पर वन गमन स्वीकार कर लिया परन्तु कालान्तर में भाई भाई का शत्रु हो गया। दुर्योधन ने पाँच पांडवों को बिना युद्ध के सूई की नौक के बराबर भूमि देने से इन्कार कर दिया था। उधर धृतराष्ट्र पुत्रमोह में व्याकुल थे। एक तो धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे ही दूसरे गान्धारी ने भी आंखों पर पट्टी बाँध ली थी। सबसे बड़ी कमी वहाँ हुई जो शान्तनु ने सत्यवती से विवाह किया उसमें सत्यवती के वरदानानुसार (देवव्रत भीष्म पितामह) ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर ली थी, जबकि वह विद्वान थे, सत्याचारी थे सत्य व न्याय का आचरण करते थे। प्रतिज्ञा न कर राज सिंहासन पर (पदासीन) आरुढ़ होते तो आज भारत की तस्वीर ऐसी न होती जैसी हम देख रहे हैं।

महाभारत युद्ध के पश्चात इस भारत भूमि ने अनगिनत त्रासदियाँ सही हैं बिन कासिम, सुबुक्त गीन, गजनवी, गौरी, बाबर, आदि ने इस धरा को रक्तरंजित किया। शाह अब्दाली ने तलवार से रौंदा। मुगल, पठान, तुर्कों के पश्चात अंग्रेज व पुर्तगाली भी यहाँ आकर बस गए और हमारी ज्ञान विज्ञान व स्वर्ण आदि धन सम्पदा को ले गए।

सबसे महत्वपूर्ण जो सम्पदा थी वह थी वेदज्ञान के स्रोत गुरुकुल आश्रम आदि, हमारे संग्रहलाय जहाँ प्राचीन काल के शास्त्र पाण्डुलिपियाँ इतिहास तथा ऐतिहासिक सामग्री थी, उसे आग लगाकर जला दिया और महत्वपूर्ण सामग्री ले गए। आज कोहिनूर जैसा हीरा भी भारत से बाहर है अन्य महत्वपूर्ण सामग्री भी विदेशों में है। नालन्दा, तक्षशिला खण्डहर बना दिए थे। गुरुकुल आश्रम नष्ट कर दिए गए।

वेद विज्ञान हमारी सम्यता व संस्कृति का स्रोत या समृद्धि व उन्नति का मार्ग था। सर्वप्रथम विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारे प्राचीन ज्ञान सर्व सनातन वैदिक धर्म के वाहक ज्ञान के मन्दिरों, शिक्षा संस्थानों,गुरुकुल, आश्रमों को नष्ट किया और वेद विरुद्ध दुष्प्रचार किया। वेद के विषय में भ्रामक विषयों का प्रचार किया। हमारी भाषा संस्कृत को अर्थहीन बताया और महत्वहीन बताया। राम, कृष्ण जो हमारे इतिहास व जीवन की धुरी हैं, समाज के मार्ग दर्शक हैं उनके विषय में झूठे मनगढन्त प्रक्षिप्त विषय थोप दिए। इतिहास को विकृत करने का पूरा प्रयत्न किया और हिन्दी संस्कृत को हीन बताकर अंग्रेजी को थोपने का षडयन्त्र चलाया। मैकाले जैसे उनमें से ही थे।

आज हम भी अंग्रेजी पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। अन्ध विश्वास पाखण्डों को मानने लगे हैं पुराणों में हमारे पूर्वजों के चरित्र को तोड़ा मरोड़ा गया है। उसे पढ़ते ही लज्जा आती है। श्री कृष्ण को चोर, नाचने वाला, गोपियों के वस्त्र हरण करने वाला, मटकी तोड़ने वाला, सहस्रों नारियाँ रखने वाला आदि आदि बताया है इसी प्रकार से अन्य विषय प्रक्षिप्त रूप से अनेक स्थानों पर डाल दिए गए।

मूर्ति पूजा, वर्ण व्यवस्था, ऊँच-नीच, स्त्री व शूद्र को वेद पढ़ने से रोकना, सती प्रथा, तांत्रिक कर्म, फलित ज्योतिष, गंडा तावीज, कब्रों की पूजा, पीरों को पूजना, मृतक भोज, श्राद्ध आदि को मानना पूर्णतः अवैदिक कर्म है। आज भी जातिप्रथा का अत्यधिक प्रभाव समाज व राजनीति में हो रहा है। चुनावों में जातिगत समीकरण लगाए जाते हैं। यह सब विषय ऐसे हैं, जिनसे देश उन्नति करने में पिछड़ रहा है और लूट बलात्कार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अन्याय पक्षपात बढ़ रहा है।

जब तक यह सामाजिक रोग दूर नहीं हो जाते भारत देश महान नहीं हो सकता भले ही चारों ओर सर्वश्रेष्ठ यातायात के साधन हों, ऊँचे-ऊँचे फ्लैट (अट्टालिकाएँ), वातानुकूलित गाड़ियाँ व आरामदायक गद्दे व शयाएँ हों। सीमा से अधिक धन भी हो तब भी हम शान्ति से नहीं रह सकते जब तक कि मानसिक व आत्मिक शान्ति नहीं मिलेगी। समाज व्यथित ही रहेगा, जहां मनों में कुत्सित भावनाएँ हों। मन व्यथित चिन्ता दुख आदि से भरे हों, मनों में ईर्ष्या-द्वेष पक्षपात एक दूसरे को अपमानित करने की भावना हों, भय से रात्रि को नींद भी न आए जहाँ चारों ओर लूट, बलात्कार, हत्या, दहेजहत्या, डाका, आगजनी, व्यभिचार, कामुकता, अशिक्षा पनप रहीं हो वहाँ मनुष्य स्वर्ण के ढेर पर बैठ कर भी सुखी नहीं रह सकता।

आज की शिक्षा मात्र व्यवसाय व जीविकोपार्जन हेतु ही है चरित्र व व्यक्ति के निर्माण वाली नहीं, आत्मिक ज्ञान तो कोसों दूर तक नहीं। इसलिए अच्छे पढ़े लिखे लोग दुराचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार व अनेक अपराधों में लिप्त पाए जाते हैं। अनेक शिक्षक विद्यार्थी तक अनेक स्थानों पर मादक द्रव्यों का भी प्रयोग करते पाए जाते हैं। सभ्यता व संस्कृति से दूर हो रहे हैं।

देश विश्व को आध्यात्म की शिक्षा देता था। आज पाश्चात्य सभ्यता के कुचक्र में फँस रहा है, जिस देश में चक्रवर्ती शासक होते आए आज आतंकवाद, भ्रष्टाचार व अपराधों से ग्रस्त है।

जिस देश में वेद जैसे पवित्र ज्ञान की गंगा बहती थी आज अन्ध विश्वास पाखण्ड तांत्रिक कर्म बढ़ रहे हैं। शिक्षा संस्थानों में भी पाश्चात्य सभ्यता ने सेंध लगा दी है। संस्कृत हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी हावी हो गयी है। संस्कृत के विद्यालय प्रायः समाप्त होते जा रहे हैं। देश व परिवेश भी विदेशी हो रहा हैं। वेद की शिक्षा को भूल रहे हैं। जन्मदिन पर बर्थडे के केक कटने लगे है। अग्निहोत्र नहीं होते। कान्वेन्ट स्कूल और उनमें भी टाईबेल्ट पर अधिक बल दिया जाता है। वेद की शिक्षा को जानते तक नहीं न ही वेद का कहीं प्रकाश हो रहा है।

स्वतन्त्रता के पश्चात कितना समय हो गया हम वेदों की ओर अभी तक नहीं लौटे। वास्तविक स्वतन्त्रता के लिए वेदों की ओर लौटना ही होगा।

चन्द्र लोक कॉलोनी, खुरजा
बुलन्दशहर, उ.प्र.

वरिष्ठ नागरिकों के लिए शुभ सूचना

आयुधाम सोसायटी सीनियर सिटीजन होम नई दिल्ली जो पिछले 25 वर्षों से वृद्ध लोगों के लिए सेवा का कार्य कर रही है, आयुधाम सोसायटी में नवीन भवन निर्माण के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवासीय सुविधा का विस्तार किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि वरिष्ठ नागरिकों को रहने की जरूरत महसूस हो तो आप उन्हें यहाँ पर आने की प्रेरणा दें। अगर आप या आपके साथियों को भी रहने की आवश्यकता हो तो आपका भी स्वागत है। रजिस्ट्रेशन फार्म उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्रः श्री अशोक आनन्द मो. नं. 9654783140 अथवा श्री आर.पी. रहेजा मो. न. 9717054558

मेरी इज़राईल यात्रा

● मामचन्द रिवाडिया

श्री हरिबाबू कंसल महामंत्री हिन्दू हेरिटेज नई दिल्ली के नेतृत्व में देश के भिन्न प्रदेशो के 19 व्यक्तियों के साथ मैं वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतू 24 जुलाई 1977 की रात्रि को एक बजे वाई-76 से सहारा हवाई अड्डे मुम्बई से इजराईल के लिए रवाना हुए। मुम्बई में विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्रीमान अशोक सिंघल जी ने मुझ से कहा कि मैं इजराईल पर विशेष जानकारी प्राप्त करके एक पुरा लेख लिखूँ जिससे लोगो को ईजराईल के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त हो।

25-07-1977 को हमारा जहाज प्रातः 9:40 पर इजराईल के तेल अबीबा हवाई अड्डे पर पहुँचा। वहाँ से हम बस से होटल ईडन गए। बस में हमारे साथ गाईड थे श्री इजरा। वे हमें हर बात तथा जगह से अवगत करा रहे थे, बहुत मिलन सार व्यक्ति थे। स्नान तथा जलपान के बाद हम इजराईल के टिबरयाज क्षेत्र के दर्शनीय स्थल देखने के लिए रवाना हुए। इजराईल यहूदियो का गृहस्थान है। यह मेडिटेरियन सागर के तट पर बसा हुआ है। इसकी सीमा लेबनान, सीरिया, जोर्डन और मिश्र से लगी है। इसकी लम्बाई 470 कि.मी. और चौडाई 135 कि.मी. है। इसके दूसरी साईड में डेड-सी है। यह संसार में सबसे निचला स्थान है। इसमें कोई जीव-जन्तु नहीं रहता है। इजराईल में पानी की बहुत कमी है फिर भी यहाँ कि सरकार ने अनेक प्रयास करके 1960 में डेम टैंक का निर्माण करके पाईप लाइनों द्वारा शहरो तक पानी पहुँचाया है। यहाँ की जनता बहुत बहादुर तथा देश पर मिटने वाली है।

जो फल हमारे देश में पैदा होते है वे सब फल-सब्जी यहाँ भी पैदा होती है।

यहूदिया का जलदाता पैट्रियार्क अब्राहम था। बेटा आइसाक और पोता जैकब था। यहाँ भारी अकाल पड़ने के कारण ये सब मिश्र चले गए जहाँ पर ये गुलामी का जीवन जीने पर विवश थे। काफी समय के बाद मौसेस अपने लोगों को मिश्र से इजराईल, वापिस ले आये। यहाँ कि जनता 40 वर्ष तक 'सिनाये रेगिस्तान' में भटकते रहे। इसके बाद मौसेस ने अपने देश का निर्माण किया और कानून राज कि स्थापना की, जिसमें टैन कमांडमेटस भी शामिल है। डेविड के पुत्र सौलोमन ने येरुशलम को राजधानी बनाया और यहाँ पर एक मंदिर बनाया जिसका नाम "टैम्पल टू इजराईल दन गोड" रखा। इस देश पर भिन्न-भिन्न शासकों ने शासन किया इसके बावजूद यहूदियो का वर्चस्व कायम रहा। 19वीं शताब्दी में जियोनिज्म नामक संगठन बना और इसने राष्ट्रवादी शक्तियों को संगठित करके इजराईल राष्ट्र का निर्माण किया और हिब्रू भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित किया। मुस्लिम बाहुल्य अरब देश इज़राईल के अस्तित्व को सहन नहीं कर सके लेकिन इज़राईलों की देशभक्ति तथा अमरिकनों के सहयोग के कारण अरब देशों की नाक में दम कर दिया।

"इजाईल के मुख्य दर्शनीय स्थान"

1. ईसामसीह का जन्मस्थान :- येरोशलम में स्थित है। बहुत विशाल है, हरेक देश का व्यक्ति यहाँ आता है। पास में एक बहुत बड़ी मस्जिद है जिसका मुसलमानों में बहुत महत्त्व है।
2. ईसा-मसीह का मृत्यु स्थान :- यहाँ पर भिन्न-भिन्न धर्मो के लोग प्रार्थना करते है। हमने वह स्थान भी देखा जहाँ ईसा-मसीह के सूली पर चढ़ाया गया था।
3. डायमंड फैक्ट्री :- यह इजराईल की राजधानी येरुशलम में स्थित है। हमें फिल्म के माध्यम से दिखाया गया कि किस तरह खानों से पत्थर निकाला जाता है और उसे काट-काट कर मशीनों द्वारा तराशा जाता है। हमें उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ बहुमूल्य हीरे-मोती, डायमंड रखे हुए थे। विदेशी लोग खरीद रहे थे।
4. कापानाहम : यह इजराईल- जोर्डन कि सीमा पर स्थित है। दोनों देशों के सैनिक इस महान रेगिस्तान में अपने-अपने देशों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
5. गोलन की पहाडिया : यह इजराईल और सीरिया की सीमा को जोड़ती है। यहाँ पर हमने U.N.O का कैम्प भी देखा जो यह देखता है कि कोई देश किसी को नुकसान तो नही पहुँचा रहा है।
6. किबूत यहाँ पर सब एक परिवार के रूप में रहते है। योग्यता के अनुसार काम दिया जाता है। यहाँ पर स्त्री-पुरुष बच्चे खुश दिखाई दिए। गुरुकुलों का सा माहौल दिखाई दिया।
7. जोर्डन रिवर : यह इजराईल-जोर्डन की विभाजन रेखा है। डेड सी के साथ यह नदी बहती है। हम डेड-सी में नहाये जो बहुत नमकीन है।
8. बेट- शेअन : यह बड़ा रोमन शहर है। 1570 में यहाँ पर यह कानून बना था कि यहाँ की सारी जमीन सरकारी है। कोई भी व्यक्ति यहाँ जमीन नहीं खरीद सकता।
9. मेग्गीडो : यह शहर बहुत ऊँचाई पर है। इस शहर का निर्माण 5500 वर्ष पूर्व हुआ था। क्रेन द्वारा जाया जाता है।
10. नजारेश : यह यहाँ का प्राचीन शहर है जहाँ जीजस ने अपने जीवन का कुछ समय चुपचाप रहकर गुजारा था। यहाँ पर हमने एक गुफा देखी जो काफी गहराई में पानी है। जो शहर की पानी की आवश्यकता को पूरी करता है।
11. जोरिकोसिटी : यह एक प्राचीन शहर है। यहाँ एक पुरानी अलास्का मस्जिद तथा अजायबघर है।
12. वेस्टर्न दीवार : यह येरुशलम में काफी लम्बी दीवार है। यह इजराईल में यहूदियो के लिए प्रेरणा स्थल है।
13. डोम आफ रॉक : यह वह स्थान है जहाँ से मोहम्मद साहब स्वर्ग गए थे। यह मुसलमानों का पवित्र स्थान है।
14. डाल. आकरा मास्क : मुसलमानों के लिए मक्का मदीने के बाद इस मस्जिद का स्थान है। यह बहुत की शानदार मस्जिद है। इसे देखने के लिए सारे संसार से लोग आते हैं।
15. होली सेपुल्बर : यह वह स्थान है जहाँ ईशू को सूली पर लटकाया गया था। यहाँ पर इनकी कब्र बनी हुई है। यहाँ पर संसार की भलाई के लिए प्रार्थना की जाती है।
16. हरटजल टाम्ब यह वह स्थान है जहाँ पति-पत्नी को साथ-साथ दफनाया जाता है। यदि पत्नी पहले मर जाए तो पति के लिए बराबर का स्थान रखा जाता है।
17. याद वसेम म्युजियमः यह इजराईल का मुख्य संग्रहालय है। यहाँ पर अनेक चित्र है जिसके माध्यम से दर्शाया जाता है कि किस तरह जर्मनियों ने यहुदियों को बेरहमी से यातनाएँ दी थीं। हमने देखा कि भारी संख्या में विद्यार्थियों को यह दिखाया जाता है।
18. टेर्रा समता चर्च : यह वह स्थान है जहाँ गठरियों को पहली बार अनुभव हुआ कि पृथ्वी पर किसी महान व्यक्ति ने जन्म लिया है।
19. बेथलेहम : देवताओं ने घोषणा की थी कि यह वही स्थान है जहाँ ईशामसीह ने जन्म लिया। यहाँ हमने डेड-सी में स्नान किया। श्री बालकृष्ण जी नायक सहमंत्री विश्व हिन्दू परिषद् ने सैकड़ों विदेशी दर्शनाथियों को आश्चर्य में डाल दिया जब इन्होंने अनेक आसनों के माध्यम से समुद्र में स्नान किया। डेड-सी के पानी से क्रीम आदि सौन्दर्य की वस्तु बनाई जाती है।
20. मसाडा केबल कार : यह समुद तल से काफी ऊँचाई पर है। हम ट्रौली द्वारा पहाड़ की चोटी पर चढ़े। यहाँ से जोर्डन सीरिया मिश्र की सीमाएँ दिखाई देती हैं। बड़ी दूरबीन से हमने इन्हें देखा था।
21. अशाकयेलोन : समसन से सम्बन्धित फिलिस्तीन शहर है। यह एक महान धार्मिक व्यक्ति जिसका नाम हेरोड़ था उसका जन्म स्थान है।
22. गाजाः यहाँ समसन को बन्दी बनाया गया था और वे अन्धे हो गये थे। होली फैमिले के रास्ते जब मिश्र जाते है तब ये रास्ते में पड़ता है।
23. वेली आफ अमोलोन : यह वह स्थान है जहाँ जोशुआने सूर्य को हुक्म दिया था कि वे अपने स्थान से जब तक न हटे जब तक कि यह कनानाईटस को परास्त न कर दे।
24. ताबघा चर्च : गैलीली समुद्र के किनारे बना हुआ है, (जो अनेक यादगारों से जुडा हुआ है। इस स्थान पर जीजस कब्र से पुनः प्रकट हुए और 6000 लोगों को भोजन कराया।

29.07.1997 से 3.8.1997 तक जोर्डन और मिश्र की यात्रा करने के बाद हम ताबा बोर्डर से ए.सी. कोच द्वारा पुनः इजराईल के प्रसिद्ध नगर 'नेतानिया' शहर पहुँचे। यहाँ पर हम 'सिरोहित होटल' में ठहरे।

"दी अन्डर वाटर आब्जरवेटरी मेरीन पार्क (इलीट)"

यह समुद्र के तट पर स्थित है। हमने लाल सागर में स्टीमर द्वारा भ्रमण किया। फेरी, स्टीमर, तथा नौकाओं को सागर में दौडते देखा। बहुत सुन्दर नजारा था।

नैतानिया : एक एक बहुत ही सुन्दर ढंग से बसा शहर है। यहाँ पर यूरोप के लोग बड़ी संख्या में सैर करने के लिए आते हैं। इसे होटलों का शहर भी कहते हैं। यहाँ पर मंहगाई बहुत है। किसी चीज़ को खरीदने की हिम्मत नहीं होती। हमने यहाँ पर एक चाय ही पी थी।

तैल-अबीब : 5.8.1997 का दिन हमारी यात्रा को अन्तिम दिन था। वास्तव में इजराईल की राजधानी तेल-अबीब होनी चाहिए था। क्योंकि यह शहर राजधानी होने की हर तरह की क्षमता रखता है। यहाँ पर सभी देशों के दूतावास हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के दफ्तर भी हैं। बड़े-बड़े पाँच तारा होटल भी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भी है। 4.8.1997 को हम तेल अबीब स्थित भारतीय दूतावास गए। भारत के राजदूत श्री एस.एस. मेनन मिले। उन्होंने हमें जलपान भी कराया। श्री चक्रवर्ती जी जो मिनिस्टर है उन्हें मैंने महात्मा दुर्बलनाथ जी कि जीवनी भेंट की जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार की और सग्रहालय में रखने का आश्वासन दिया।

शेष पृष्ठ 09 पर

विपत्तियाँ कभी अकेली नहीं आतीं

● लाला बलराज भल्ला

"रंज से खूँगर" (खून वाला) हुआ इन्साँ,
तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी
कि आसां हो गयीं।"

"विपत्तियाँ कभी अकेली नहीं आतीं", किसी ने क्या ही ठीक कहा है। माता जी बीमार तो पहले ही थीं, परन्तु मेरी पकड़ा–धकड़ी ने उनको अधिक निर्बल कर दिया। दिन–प्रतिदिन आशा निराशा में परिणत होने लगी। रोग असाध्य हो गया। मातृ–प्रेम ने उन्हें मजबूर किया वे मृत्यु–शय्या पर लेटे हुए मेरे मिलने की प्रार्थना करें। प्रार्थना स्वीकार न हुई। ईश्वर की अथाह इच्छा पूर्ण हुई। कौन कह सकता है इसमें क्या भेद था? ईश्वर की प्रबल इच्छा प्रकट होती है, मनुष्य उसके विरुद्ध घोर युद्ध आरम्भ करता है, कई बार सफलता के निकट पहुँचता हुआ प्रतीत होता है, अन्त में उसकी ही इच्छा संपूर्ण होती है। मनुष्य मुँह के बल गिर जाता है, अपने उत्पन्न करने वाले को बार–बार कोसता है, दिल भी झुँझलाता है, आँखों में आठ–आठ आँसू बहाता है, पर यह नहीं समझता कि ईश्वर जो कुछ करता है, हमारी भलाई के लिए करता है। समय व्यतीत होने पर ईश्वर का सौंदर्य खुलता है और हम अपनी मूर्खता पर हाथ मलते हुए उसकी महानता के लिए धन्यवाद देते हैं। जब 1912 में श्री प्रताप ने मुझे राजकुमारों का ट्यूटर नियत किया, तो एकदम कालेज छोड़ कर जोधपुर चले आने की आज्ञा भेज दी। स्वभावतः मेरा विचार दशहरा देखकर लाहौर छोड़ने का था। भाग्यवश उसी समय मेरे भगिनी–पति दीवान राधाकृष्ण जी वहाँ जज के पद पर नियत हो गए और जोधपुर जाने के लिए लाहौर आ गए। मुझे मजबूर किया गया कि मैं उनके साथ 12 तारीख को जोधपुर चला जाऊँ। मेरे मित्रों ने कई प्रकार से प्रयत्न किया कि मैं उस दिन रह जाऊँ और एक सप्ताह के बाद विजयदशमी का उत्सव मना कर उन से जुदा होऊँ। यहाँ तक कि जिस मित्र को मैंने गाड़ी लाने के लिए बाज़ार भेजा, उसने जानबूझ कर खूब देर लगा दी और रास्ते में गाड़ी वाले को आहिस्ता चलने के लिए कह दिया ताकि हम समय पर स्टेशन में उपस्थित न हो सकें। स्टेशन के रास्ते में जान–बूझ कर बिस्तरा गाड़ी से नीचे गिरा दिया गया और कई बहानों से गाड़ी को ठहराया गया। परिणाम यह हुआ, गाड़ी चलने का समय रास्ते में ही व्यतीत हो गया। हम अपना फ़र्ज पूरा करने के लिए स्टेशन पर गये, परन्तु भाग्यवश रेलगाड़ी एक घंटा लेट थी। सो मुझे जाना ही पड़ा। उस समय मैं मन ही मन में अपनी किस्मत को कोसता था, कहता था, मालूम नहीं अब नौकरी से कब फ़रागत (छुट्टी) मिलेगी और लाहौर का दशहरा अपने कॉलेज के सहपाठियों के संग देखने का पुनः कब अवसर मिलेगा। मुझे उस समय क्या मालूम था कि मेरा 'दीर्घ जीवन' मुझे लाहौर से बाहर ढकेल रहा है। अठारह मास बाद मुझे एक भयानक साज़िश का नायक ठहराया जाएगा और मेरा जीवन 1912 के 12 अक्तूबर को लाहौर से बाहर होने पर निर्भर रहेगा। सैशन जज और चीफ़ कोर्ट के न्यायाधीशों ने जो फैसला हमारे अभियोग का लिखा, उसमें मेरे और भाई बालमुकुन्द के अन्दर केवल भेद यह रखा कि मैं 15 अक्तूबर 1912 को लाहौर से गैर–हाज़िर था और वे लाहौर ही में उपस्थित थे। यहाँ मुझे इस अनुपस्थिति के लिए जीवन–दान मिला, वहाँ भाई जी को इस उपस्थिति के लिए फाँसी पर चढ़ना पड़ा। 1912 में मैं जिस भाग्य को कोस रहा था, दो वर्ष बाद उसी भाग्य में मैं अपना जीवन–दाता समझ कर ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था।

कभी–कभी हम ईश्वर के अनन्त कामों को देर तक भी नहीं समझ सकते। मनुष्य विपत्तियों से घिर जाता है। एक के बाद दूसरी विपत्तियाँ मनुष्य को घबराने लगती है और वह समझता है, मानो ईश्वर उससे वैर कर रहा है। जख़्मी पैर ही बार–बार ठोकर खाता है। आपद्–ग्रस्त मनुष्य ही नयी–नयी विपत्तियों का ग्रास होता है। 1914 का राष्ट्रीय वर्ष हमारे कुटुम्ब के लिए एक ऐसा समय था, जब हर प्रकार की आपत्ति बड़ी प्रबलता से हम सब पर आक्रमण कर रही थी। रोग ने भी सोचा, समय अभी है, शायद फिर हाथ न आएगा। दिल खोल कर हमला किया। कुटुम्ब का हर एक मैम्बर बारी–बारी किसी न किसी भयानक बीमारी के अंदर ग्रस्त हो गया। ऐसे समय में इस परिवार को ऐसी कठिन परीक्षा में डालने में ईश्वर की क्या इच्छा थी, कहना कठिन है। हाँ, इसके अन्दर भी ईश्वर को हमारी बेहतरी मन्जूर थी, इसमें मुझे कुछ भी संदेह नहीं।

माता जी को जब बतलाया गया कि उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई, तो उनको जीवन नीरस प्रतीत होने लगा और चंद घंटों के अंदर ही उन्होंने व्यास–पूजा के दिन इस अनित्य संसार का परित्याग कर परमपिता के चरणों में विश्राम पाया।

मैं चौंक कर उठ बैठा। दरवाज़े के निकट गया। जमादार साधारण तौर पर जंगलों का मुलाहज़ा कर रहा था। रात काफ़ी व्यतीत हो चुकी थी। लाहौर जाने वाली सब आशाएँ मिट गयीं। मन के अंदर नाना प्रकार के भावों ने आवेश किया। मैं कैसा भाग्यहीन हूँ, मृत्युशय्या पर लेटी हुई माता से कितनी दूर हूँ। इन हाथों ने कौन से कुकर्म किए हैं कि मैं इनको मातृ–सेवा से पवित्र नहीं कर सकता? ये कान अवश्य ही अभागे हैं कि मरती हुई माता के आदेश और उपदेश को सुन नहीं सकते। इन आँखों की क्या आवश्यकता है, जो प्रेम–मूर्ति माता के दर्शनों से तृप्त होने का अवसर नहीं लेती? इस विद्या, बुद्धि और शारीरिक बल का क्या फ़ायदा, जो समय पर काम नहीं आ सकता? प्रत्येक क्षण जो व्यतीत हो रहा है, फिर लौटने का नहीं और अभी तक कोई भी मेरे स्थूल शरीर को इन लोहे के जंगलों से मुक्त करने न आया। टहलते–टहलते मन की शांति क्रोध में परिणत होने लगी। क्या ब्रिटिश बाजू के अन्दर इतनी ताकत नहीं कि वह मुझे लाहौर तक ले जाने और ले आने का बंदोबस्त भी नहीं कर सकती? यदि ऐसा ही है तो ऐसी सरकार का इस देश पर हुकूमत करने का क्या जस्टीफ़िकेशन (औचित्य) हो सकता है? क्या वह सरकार जो लाखों जर्मनों की हत्या कर अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकती है, क्या वह सरकार जो हजारों मुसलमानों का खून कर मैसोपटामिया पर अपना अधिकार जमा सकती है, क्या सचमुच ही वह सरकार एक निरस्त्र बँधे हुए कैदी की रक्षा अपने सुरक्षित राज्य की राजधानी में नहीं कर सकती? क्या पुलिस के अफ़सर और नौकरशाही के नेता मनुष्यत्व से हीन हैं अथवा मनुष्य होते हुए हृदयहीन हैं? क्या ये पब्लिक के सब नौकर मातृहीन हैं, जो मातृहीन हैं, जो मातृभक्ति और मातृप्रेम को न समझ कर एक पराधीन पुरुष के साथ ऐसा अमानुषिक व्यवहार करने में ज़रा भी संकोच नहीं करते? जुबान तो बंद थी, पर दिल नौकरशाही के नेता को पुकार–पुकार कर कह रहा था–

"दुआ है कि आतेश" (अग्नि) इश्क में
तू भी मेरी तरह जला करे।"

लेखनी मेरे उस समय के विचारों को लेखबद्ध करने में असमर्थ है। बेहतर है कि वे विचार सदा के लिए ढके रहें और अनधिकारियों के दृष्टिपात से अपवित्र न हों।

दूसरा रोज़ इतवार का था। जिस किसी तरह से काटा। सोमवार भी गुजर गया और लाहौर से कोई ख़बर न मिली। पंडित लखपतराय जी ने आगामी समाचार के लिए मुझे तैयार करने का प्रयत्न किया, परन्तु मैं तो आगे ही हर एक बात के लिए तैयार था। मंगल के रोज़ कचहरी में आते ही पंडित जी ने बड़े धैर्य से मुझे बतलाया कि माता जी सब कष्टों से बरी हो गयी हैं। अश्रुओं के बजाय मेरे चेहरे पर एक मुस्कराहट छा गयी। जो चित्त दो रोज़ से अत्यन्त व्यथित था, आज सहसा शांत हो गया। जो भाव कितने घंटों से मन में अशान्ति, चिन्ता, क्रोध और क्षोभ उत्पन्न कर रहे थे, अब वे बिना किसी प्रयत्न के सदा के लिए लुप्त हो गए। 'ईश्वर तू धन्य है', मेरे मुँह से ये शब्द सुनकर मेरे सहयोगी विस्मित थे कि मैं किस प्रकार का प्रेम–शून्य मनुष्य हूँ, जिसको प्रेम–मूर्ति माता का वियोग न ही तो रुला सकता है और न ही शोकातुर कर सकता है। मुझे यह शांति कहाँ से प्राप्त हुई, मैं भी कुछ नहीं कर सकता। हम बहुधा देखते हैं, जब मनुष्य अत्यन्त प्रसन्न होता है, तो उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह निकलती है। क्या इसका उलट ठीक नहीं? जब मनुष्य बहुत एक शोकों के नीचे दब जाता है, तो वह शोक–रहित हो शान्त–चित्त हो जाता है। ज़ौक ने ठीक ही कहा है–

"दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।"

उस रोज़ जब हम लंच के समय चने खाने के लिए बैठे, तो सबसे पहले मैंने चनों की ओर हाथ बढ़ाया। मेरे मित्र मेरे मुँह की ओर ताकते थे। मैं जानता था यदि मैंने हाथ आगे न बढ़ाया, तो आज सब भूखे रहेंगे। शाम को जब निर्जन कुटिया में पहुँचा, तो मेरी आँखें भर आयीं, हाथों ने खाना छूने से इन्कार किया। संध्या–वंदन के बाद मन शांत हो गया और मैं थोड़ा कुछ खा कर लेट रहा। इसके बाद जेल से छूटने तक मैं अपने प्रण पर दृढ़ रहा और मैंने कभी जेल में किसी भी विपत्ति के समय अश्रुपात नहीं किया।

देहली–बन रहस्योद्‌घाटन
से साभार

☞ पृष्ठ 08 का शेष

मेरी इज़राईल यात्रा...

इजराईल में यह नियम है कि 18 वर्ष के लड़के–लडकियों को तीन वर्ष तक फौज की ट्रैनिंग लेना अनिवार्य है जहाँ वह प्रधान मंत्री का बेटा–बेटी क्यों न हो।

भारतीय दूतावास से सीधे हम इजराईल के हवाई अड्डे गुरियन डोयर पोर्ट पहुँचे। इजराईल में हम 6 दिन रहे बहुत नजदीक से इजराईल को देखा समझा और बहुत प्रभावित हुए।

5.8.1997 को रात्रि के 10 बजे LY- 85 से दिल्ली के लिए रवाना हुए। 8:30 घन्टे की यात्रा करके प्रातः 6:30 बजे इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर उतरे और टैक्सी द्वारा अपने–अपने घरों को प्रस्थान किया।

कुछ दिनों पहले हमारे देश के प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी इजराईल गए थे। उनका भव्य स्वागत हुआ। भारत–इजराईल की दोस्ती बढ़ी कई समझौते हुए जिससे दोनों देशों का बहुत लाभ होगा।

A/C-23 टैगोर गार्डन नई दिल्ली 27
मो. 9212003162

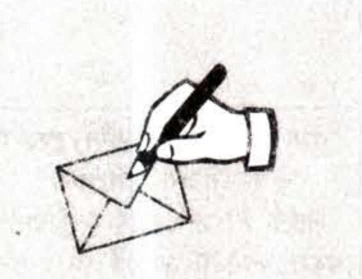

पत्र/कविता

वह बैठा सब देखता, पर रहता है मौन

अजर अमर अविनाशी तू, खुद को ले पहचान।
साधन नहीं साधक तू, मालिक खुद को जान।।

जो खुद को पहचानता, विजय मौत पर पाए।
अन्तिम दस्तक पर सदा, कपाट खोल वह पाए।।

थर थर डर से कांपता, मृत्यु भय सताए।
मोह देह से पालता, कभी विजय ना पाए।।

अन्तिम समय जब आ गया, देना पड़े हिसाब।
कर्म बना कर लेखनी, लिखी तूने किताब।।

मनमानी तू कर रहा, सोचे रोके कौन।
वह बैठा सब देखता, पर रहता है मौन।।

नीर क्षीर विवेक से, वह तो करता न्याय।
अपने कर्मों से भला, कौन कभी बच पाए।।

लुक छिप कर जो कर रहा, सोचे देखे कौन।
तेरे भीतर बैठ कर, सब देखे वह मौन।।

मेरा मेरा मानता, सर पर बोझ उठाए।
उसका उसके सौंप कर, बोझ मुक्त हो जाए।।

जो कुछ मेरे पास है, मैं मानूं अधिकार।
सब कुछ तो उसका दिया, सभी मोह बेकार।।

धरा धरा रह गया, साथ नहीं ले जाए।
सद्कर्मों को जोड़ ले, साथ सदा जो जाए।।

नरेन्द्र आहूजा "विवेक"
602 जी.एच. 53 सैक्टर–20
पंचकूला, हरियाणा
मो. 9467608686

मंदिर से बढ़ेगी इस्लाम की इज्ज़त

देश के सर्वमान्य शिया नेता मौलाना कल्बे–सादिक ने जो बात कही है, अगर वह मान ली जाए तो अयोध्या का मंदिर–मस्जिद विवाद तो हल हो ही जाएगा, सारी दुनिया में भारतीय मुसलमानों की इज्ज़त में चार चाँद लग जाएँगे। मुस्लिम इतिहास की कुछ घटनाओं के कारण इस्लाम के बारे में अन्य मजहबों में जो अप्रिय छवि बन गई है, उसे भी हटाने में भारतीय मुसलमानों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाएगा।

मौलाना कल्बे–सादिक ने कहा है कि अयोध्या मसले पर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला यदि हिंदुओं के पक्ष में जाता है तो मुसलमानों को उसे शांतिपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए और हिंदुओं को वहां राम मंदिर बनाने देना चाहिए। यदि वह फैसला मुसलमानों के पक्ष में आ जाता है तो भी वह जमीन मुसलमान लोग हिंदुओं को दे दें ताकि वे वहाँ राम मंदिर बना सकें। बदले में वे करोड़ों हिंदुओं के दिल पा जाएँगे। दिल जीत लेंगे।

मौलाना के इस विनम्र निवेदन को वे लोग क्यों मानेंगे, जिनकी सियासी दुकान इसी विवाद के कारण चल रही है? यदि वे लोग अदालत के किसी भी फैसले को मानने की कसम खा रहे हैं तो मैं उनसे पूछता हूँ कि यदि वह फैसला मंदिर के पक्ष में आ गया तो वे क्या करेंगे? तब मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी होगा। लेकिन यदि वे मौलाना की सलाह मान लें तो उनकी इज्जत में इजाफा नहीं हो जाएगा? बाबरी मस्जिद का क्या है? उसे आप कहीं भी बना लीजिए। वह तो किसी की भी जन्मभूमि नहीं है। न इब्राहीम की, न मुहम्मद की, न अली की, न उमर की, न अबू बकर की और न ही बाबर की! जबकि हिंदू मानते हैं कि वह राम की जन्मभूमि है।

राम तो सबके हैं। अल्लामा इकबाल के शब्दों में व इमामे–हिंद हैं। राम के वक्त तो हिंदू नाम का एक इंसान भी भारत में नहीं था, सब आर्य थे। लेकिन हिंदू राम को अपना भगवान मानते हैं, क्योंकि वे भारत के महापुरुष हैं। ऐसे ही भारत के मुसलमान भी राम को अपना महापुरुष मान सकते हैं। ऐसा मानने से उनकी मुसलमानियत बिल्कुल भी कम नहीं होगी। इंडोनेशिया दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम देश है और राम उसके महापुरुष हैं।

इसके अलावा, अयोध्या का मंदिर–मस्जिद विवाद मूलरूप से धार्मिक बिल्कुल नहीं है। यह हिंदू–मुसलमान नहीं, देसी–विदेशी का विवाद है। यदि यह धार्मिक विवाद है तो बताइए बाबर ने अफगानिस्तान और उत्तर भारत की फतह करते वक्त दर्जनों मस्जिदें क्यों तोड़ीं?

विदेशी आक्रांता के पास देसी लोगों का मान–मर्दन करने के यही हथियार होते हैं–उनके पूजा स्थलों, उनकी स्त्रियों और उनकी संपत्तियों को हथियाना! मेरी समझ में नहीं आता कि हमारे मुसलमान इस्लाम के भक्त हैं या विदेशी आक्रमणकारियों के? मौलाना कल्बे–सादिक ने वह बात कही है, जो इस्लाम का सच्चा भक्त ही कह सकता है।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
ईमेल– dr.vaidik@gmail.com

****

नकारात्मक राजनीति करने वालों से सावधान रहना होगा

स्वतन्त्रता दिवस के पुण्य अवसर पर देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लालकिले की प्राचीर से देशवासियों को सम्बोधित किया। उनका सम्बोधन ओजस्वी, तेजस्वी, प्रभावशाली, प्रेरणादायक एवं प्रशंसनीय था। एक अच्छे व आदर्श प्रधानमंत्री से देशवासी जो अपेक्षा करते हैं वह सब बातें सूत्र व सिद्धान्त रूप में उन्होंने अपने सम्बोधन में कही हैं।

देश की उन्नति अर्थात् सुख–समृद्धि–शान्ति में **'जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग' का एक प्रमुख सर्वमान्य सत्य सिद्धान्त है।** हमें लगता है कि विज्ञान में तो यह नियम भलीभांति काम करता है परन्तु सामाजिक मान्यताओं, भोजन छादन व मत–पन्थ–सम्प्रदायों में यह नियम ठीक से काम नहीं कर रहा। यदि यह नियम ठीक से कार्य करता तो एक से अधिक मत, धर्म, सम्प्रदाय, पन्थ आदि न होते और न ही इस देश में कोई सामाजिक कुरीति, अन्धविश्वास व मिथ्या परम्परा न होती। इसके कारण देश को जो हानि हुई है वह भी न होती।

स्वामी दयानन्द ने मनुष्यों की सबसे बड़ी समस्या, मत–सम्प्रदायों में विद्यमान असत्य व असत्य पर आधारित मान्यताओं, परम्पराओं व पूजा पद्धतियों, को जाना और समझा था। उन्होंने उन सभी समस्याओं को अपने व्याख्यानों, ग्रन्थों के लेखन व शास्त्रार्थों आदि में सप्रमाण उठाया भी है। वे सत्यार्थप्रकाश में मानव जीवन के लिए समान रूप से लाभकारी सत्य सिद्धान्तों व मान्यताओं का विधान करते हैं। यदि विश्व समुदाय ने उनकी बातों को अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर विचार किया होता तो पक्षपात, अन्याय, शोषण, सामाजिक अन्याय, उपेक्षा तथा हिंसा आदि से रहित एक नया विश्व निर्मित किया जा सकता था।

प्रधानमंत्री जी के अनेक संवैधानिक उत्तरदायित्व हैं जिन्हें उन्हें पूरा करना है तथा वह भलीभांति सन्तोषजनक तरीकों से उन सब को पूरा कर रहे हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्तमान की कठिन व जटिल स्थिति में देश को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। देश की जनता को उन पर पूरा विश्वास है। उनके राजनैतिक प्रतिद्वन्दी अपने राजनैतिक स्वार्थों के कारण उनकी सभी वा अधिकांश बातों का विरोध करते हैं। यहां तक की भारतीय सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक का भी प्रमाण मांगते हैं। देशवासियों को नकारात्मक राजनीति करने वाले दलों से सावधान रहना होगा और सक्षम एवं योग्य नेता को ही आगे बढ़ाना होगा तभी देश सुरक्षित, सुखी व शान्त रह सकता है।

मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोन:09412985121

****

उत्तर प्रदेश को मद्य निषेध राज्य बनायें

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य बन्धु युवा मंत्री योगी आदित्यनाथ जी से नम्र निवेदन करते हैं कि उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने हेतु राज्य में मदिरा पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगायें। बिहार, गुजरात प्रदेशों की भांति उत्तर प्रदेश में भी मदिरा की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध किया जाये। 'जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन'।

यह खेद है कि मदिरा का व्यापार तेज़ी से फैल रहा है जो असमाजिकता का प्रतीक है। हमारी युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित है तथा स्वामी दयानन्द के आदर्शों के विरुद्ध है।

विश्वास है कि माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी शीघ्र ही उत्तर प्रदेश में मदिरा के समग्र व्यापार को पूरी तरह बंद करेंगे और प्रदेश के करोड़ों परिवारों को संरक्षण प्रदान करेंगे।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट, अमरोहा244221

****

डी.ए.वी. औंध, पुणे, में वेद प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. पुणे के प्रांगण में श्रावण मास में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के साथ हुआ। प्रधानाचार्या तथा श्रीमती निर्मल बहन द्वारा यह यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में शिक्षकों एवं अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय के 'पालक शिक्षक संघ' के उप सभापति 'श्री पी.के.पंत' विशेष रूप से यज्ञ में आहुति देने के लिए आमंत्रित थे। यज्ञ और वेद सप्ताह की संपूर्ण गतिविधियों में डी.ए.वी. के शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा स्थानीय आर्य समाज के सदस्यों का संपूर्ण योगदान रहा।

विद्यालय की प्रधानाचार्या ने अतिथियों का स्वागत किया और मुख्य अतिथि 'श्री चंद्रपाल आर्य' का परिचय देते हुए अपने संबोधन में कहा कि "आर्य पर्व मनाने का मुख्य उद्देश्य आज की युवा–पीढ़ी में संस्कारों का संचार करना तथा सद्विचारों का प्रसार करना है। आर्य समाज हमें न केवल विसंगतियों से दूर रहने की राह दिखाता है; अपितु मन, आत्मा और शरीर का शुद्ध कर परमात्मा के निकट ले जाता है। वेद विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाते है इसलिए युवा पीढ़ी को वेदों का ज्ञान देना अति आवश्यक है।"

'श्री रामकुमार आर्य' तथा 'श्री सत्यदेव आर्य' के मधुर भजनों ने सभी को भक्ति भाव से भर दिया। मुख्य अतिथि आचार्य 'श्री चंद्रपाल आर्य,' जो शिक्षा शास्त्री तथा वैदिक प्रवक्ता हैं, मानव जागृति मिशन भारत के अध्यक्ष भी हैं, ने अपने प्रवचन में बच्चों में आर्य समाज की लौ को न केवल जलाए रखने बल्कि उसे आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। पंडित चंद्रपाल ने आज की शिक्षा प्रणाली में वेदों को शामिल करने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि दयानन्द जी एक पारसमणि के समान थे। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि आर्य समाज की इन बहुमूल्य बातों को बच्चों के व्यक्तित्व में उन्हें डालना होगा; जिससे अविद्या और अज्ञान दूर हो सके और प्रत्येक विद्यार्थी भारत का श्रेष्ठ नागरिक बन सके। प्रवचन के बाद धन्यवाद ज्ञापन हुआ।

कार्यक्रम शांतिपाठ के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

डी.ए.वी. जींद में छः प्रचार रथ चलाने की घोषणा

डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल, जीन्द में आयोजित श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री रामपाल आर्य जी ने हरियाणा में वेद प्रचार कार्य के लिए 6 प्रचार रथ चलाने की योजना की घोषणा की और मौके पर ही एक प्रचार रथ की चाबी स्वामी धर्मदेव जी को भेंट की। स्वामी धर्मदेव जी ने संकल्प किया कि वो इस प्रचार रथ का पहिया रूकने नहीं देंगे और प्रतिदिन एक–एक गाँव में प्रचार करेंगे।

समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, विशेष कार्य अधिकारी राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, ने विस्तार से श्री कृष्ण जी के स्वरूप को प्रकट किया और श्री कृष्ण जी के जीवन से सम्बन्धित भ्रांतियों का तर्क सहित निवारण किया। उनके व्याख्यान को सुनने के लिए जीन्द और जीन्द के आस–पास के गाँवों से हजारों की संख्या में आर्य समाजियों ने भाग लिया। श्री राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि यही सही समय है जब आर्य समाज धड़ेबंदी से मुक्त होकर वेद प्रचार का कार्य कर सकता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि यदि आर्य समाज अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रचार कार्य में जुट जाए तो पाखण्ड और अन्धविश्वास खत्म हो जाए। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा चलाए गए वैदिक प्रचार प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाने को सच्ची भक्ति और साधना बताया। उन्होंने श्री राजेन्द्र विद्यालंकार के प्रयासों की सराहना करते हुए श्री पूनम सूरी के योगदान का उल्लेख किया। जिसके कारण आज इतने बड़े समारोह में सभी लोग अपने मतभेद भूलाकर डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल, जीन्द में एकत्रित हुए है। सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा के रजिस्ट्रार आचार्य सर्वमित्र आर्य ने सम्बोधित किया और प्रसिद्ध भजनोपदेशक सुनीता आर्य जी की भजन मंडली ने श्री कृष्ण के योगेश्वर स्वरूप पर मनमोहक व जोश से भरे भजनों की प्रस्तुति दी।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

आर. आर. बावा डी.ए.वी. ...

किया। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि शहीदों के उस स्वप्न को जो उन्होंने देखा था, साकार करने के लिए सभी कुरीतियों को त्याग कर सच्चे भारतवासी बनकर निष्ठा से देशहित में कार्य करने की ओर अग्रसर हों, अपना स्वार्थ न रखकर, देश की अखण्डता, अस्मिता और गौरव के मान के लिए प्रणबद्ध रहें।

इस अवसर पर डॉ. (श्रीमती) कल्पना शर्मा ने भ्रष्टाचार मुक्त, स्वच्छ भारत के नवनिर्माण में तन मन धन से सहयोग देने के लिए सभी उपस्थित जनों को शपथ दिलाई, सभी ने बड़े उत्साह से इसमें भाग लिया।

प्रिंसीपल प्रो. डॉ (श्रीमती) नीरु चड्डा ने सभी को धन्यवाद दिया और कहा कि स्वतन्त्रता दिवस पर हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम राष्ट्र के उत्थान के लिए सदा तत्पर रहें, आजादी को बनाए रखना हमारा अहम् धर्म है सभी को धर्म, सम्प्रदाय, जाति समुदाय, वर्ग से ऊपर उठकर पहले 'भारतीय' होना है तभी हम अपने राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व निर्वाह कर सकने में समक्ष हो सकेंगे।

''भारत माता की जय'',' वंदेमातरम', 'जयहिन्द' के उद्घोष से यह समागम सम्पन्न हुआ।

नारी का सम्मान करो

लडकी पैदा हो जाने पर,
　घर में मातम सा छा जाता है,
लडका यदि जन्म लेता,
　घर खुशियों से भर जाता है।
लडकी का पालन पोषण भी,
　लापरवाही से होता है।
लडका शीघ्र जवाँ हो जाये,
　ध्यान विशेष दिया जाता है।
अरे! लड़की को लड़का समझो,
　उसे पढ़ाओ योग्य बनाओ।
नारी नर की खान है,
　नारी का सम्मान करो।

ले.देवराज आर्य मित्र
wz–428 हरि नगर
नई दिल्ली–64

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 23/24-08-2017

डी.ए.वी. इंटरनैशनल वेरका बाईपास, अमृतसर में वेद प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, वेरका बाई पास, अमृतसर में विद्यालय की प्राचार्या अंजना गुप्ता के नेतृत्व में वेद–प्रचार सप्ताह का शुभारंभ पावन यज्ञ से किया गया जिसमें विद्यालय के अध्यापक व छात्र–वृन्द सम्मिलित हुए। पावन यज्ञ के माध्यम से छात्रों व अध्यापक–वर्ग को वेदों की महत्ता व यज्ञ का हमारे दैनिक जीवन में क्या महत्व है इस विषय पर बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध करवाई गई। प्राचार्या ने अपने संबोधन में कहा कि वेद हमारे जीवन के चार मजबूत स्तम्भ हैं। वेदों में समग्र मानव जीवन की शैली विद्यमान है। वेद हमें जीने की कला सिखाते हैं। समस्त वातावरण यज्ञ की सुगन्धि से पवित्र हो गया।

वेद प्रचार सप्ताह के इस शुभ अवसर पर छात्र–छात्राओं में आर्य समाज के दस नियमों पर आधारित प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें कुशाग्रबुद्धि छात्रों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त ईश्वर–स्तुति उपासना मंत्र व अन्य वेद मन्त्रों पर आधारित मौखिक प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 20 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। छात्र–वर्ग को आर्य समाज के संदर्भ में तथा वेदों की महत्ता के विषय पर विस्तृत ज्ञान प्रदान किया गया।

वेद प्रचार सप्ताह को सफलता पूर्वक संचालित करने में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के प्रधान प्रिं. जे.पी. शूर की प्रेरणा तथा मंत्री प्रिं डॉ. नीलम कामरा का उत्साहवर्धन विशेष रूप से शामिल है। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन डॉ. वी.पी. लखनपाल एवं मैनेजर प्रि. डॉ. राजेश कुमार ने अपनी शुभकामनाएँ दी।

डी.ए.वी. मीराचक, भागलपुर में वेद एवं संस्कृत प्रचार सप्ताह

आर्य युवा समाज के तत्त्वावधान में वेद एवं संस्कृत प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत विद्यालय के धर्माचार्य महेन्द्र शास्त्री के द्वारा प्रतिदिन चारों वेदों के विशिष्ट मन्त्रों से विशेष आहुतियों के द्वारा यज्ञ करवाया गया। इस पवित्र यज्ञ कार्य में अध्यापकों एवं बच्चों ने भाग लिया। प्रतिदिन यज्ञ के पश्चात् भजन एवं प्रवचन भी हुए।

धर्माचार्य महेन्द्र शास्त्री ने 'श्रावणी उपाकर्म' के अर्थ बताते हुए कहा कि प्रतिवर्ष श्रावण महीने में वेद एवं संस्कृत प्रचार के कार्य का शुभारम्भ किया जाता है और यह निरन्तर चलता रहे और इसका प्रचार–प्रसार होता रहे, यही इसका मुख्य उद्देश्य है। इस उत्तम परम्परा को हम हृदय में धारण करते हुए जनमानस तक इसे पहुँचा सकें इसके लिए इस पुनीत कर्म को एक पर्व के साथ जोड़ दिया गया जिसे 'श्रावणी उपाकर्म यज्ञ' कहा गया।

विद्यालय के प्राचार्य श्री के.के. सिन्हा ने बताया कि सृष्टि के प्रारंम्भ में परमपिता परमात्मा ने वेदों के माध्यम से अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा इन चार ऋषियों के हृदय में जो ज्ञान प्रदान किया था उस वेद ज्ञान को हम सभी भूल चुके थे। महर्षि देव दयानन्द ने पुनः हम सभी आर्य जातियों को उसी वेद ज्ञान को प्राप्त कराने एवं उसी दिशा में आगे बढ़ाने के लिए एक उद्घोष दिया–"वेदों की ओर लौटो।" आज आर्य समाज एवं डी.ए.वी. संस्थाएँ महर्षि दयानन्द के वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वेदों के प्रचार एवं प्रसार में संलग्न हैं।

इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए वैदिक मंत्रोच्चारण, श्लोकोच्चारण, रूप लेखन, आर्य समाज के नियम, निबन्ध लेखन, नाटक इत्यादि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। जन–जन तक संस्कृत एवं वेदों की महत्ता पहुँचाने हेतु शोभा–यात्रा भी निकाली गई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु विद्यालय के प्राचार्य, अध्यापकगण एवं सभी छात्र–छात्राओं का विशेष योगदान रहा।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी ने मनाया श्रावणी पर्व

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी के प्रांगण में रक्षाबन्धन का पावन श्रावणी पर्व आदरणीय सरदार परमिन्दर सिंह पिंकी की ओर से युवा कांग्रेस के नेता श्री एच.एस. सांघा, सरदार हरिन्द्र सिंह खोसा, जिला कांग्रेस कमेटी, फिरोजपुर के प्रधान श्री सरदार चमकौर सिंह ढींडसा एवम् श्री बलबीर सिंह बाठ की अध्क्षता में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बच्चों ने इस पावन अवसर पर स्वागत एवम् राखी गीत प्रस्तुत किए, छोटे बालक बालिकाओं ने ग्रुप डॉस, गिद्धा, योगासन से सबका मन मोह लिया।

इस अवसर पर शहर व छावनी के जाने माने सज्जनों ने बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया, जिन में आश्रम के वरिष्ठ सदस्य पंडित सतीश शर्मा एडवोकेट मुख्य रूप से पधारे।

प्रबन्धक ने सम्बोधित करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् 1877 में स्थापित यह आश्रम 140 वर्षों से अनाथ बच्चों की सेवा में जुटा हुआ है। आश्रम में वर्तमान समय में 150 बच्चे निःशुल्क जीवन सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर अपना भविष्य निर्माण कर रहे हैं। उन्हें भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, औषधि आदि का प्रबन्ध दानी सज्जनो द्वारा दिये गए दान से ही सम्भव हो पा रहा हैं। वर्तमान समय में सभी बच्चे स्कूल व कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

अन्त में प्रबन्धक ने आर्य रत्न माननीय पूनम सूरी प्रधान, तथा अन्य पदाधिकारियों का कोटि–कोटि धन्यवाद किया जिनके आर्शीवाद एवम् मार्ग दर्शन से यह आश्रम प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर हैं।

श्री दयाल गुप्ता, दयाल मैडिकल हाल, द्वारा ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**